SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

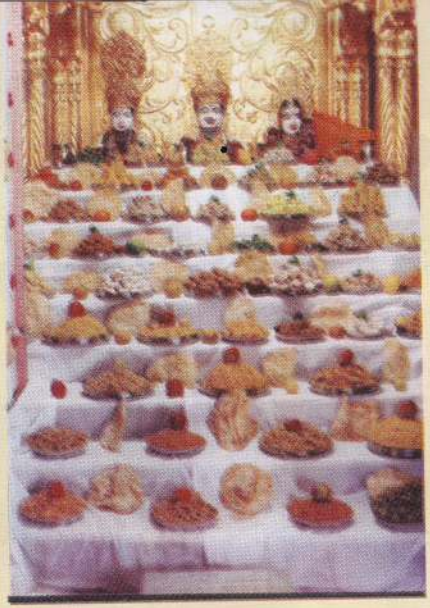
Rs. 5/- March '07



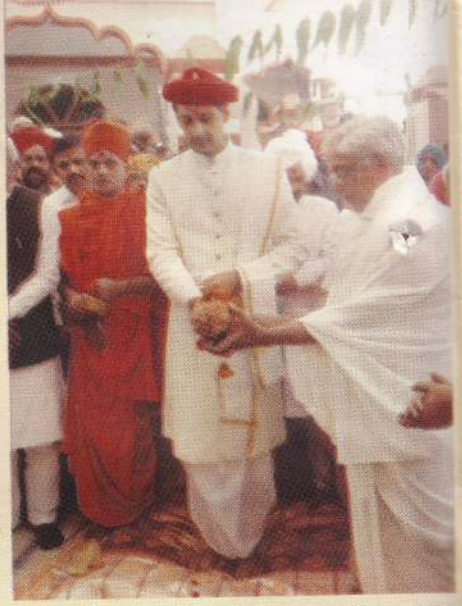
ફુલદોલોત્સવ

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





सापावाडा मंदिर में बालस्वरूप घनश्याम महाराजकी पुनः प्राणप्रतिष्ठा करते हुए पू. महाराजश्री तथा ठाकुरजीका अन्नकूट दर्शन ।



वरसोडा गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर यज्ञ में पूर्णाहुति करते हुए प.पू. महाराजश्री साथ में यजमानश्री ।



कांकरिया मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



कांकरिया मंदिर में पाटोत्सव एवं ब्रह्मभोजके अवसर पर प्रसाद लेते हुए भक्तजन ।



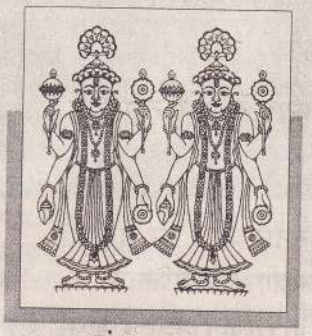


प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ६ मार्च.. -२००७



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
· २२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीहरि का प्रसादीका पत्र	५
४.	श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद	६
५.	सत्संग में जिज्ञासु बहुत होते हैं	७
६.	बहुत बड़े साधु	८
७.	आत्मचिंतन अवतार के अवतारी का	११
८.	सत्संग सुरभि : बड़ी शरण महाराजकी	१२
९.	सत्संग बालवाटिका	१४
	(१) उद्यम करो फल भगवान देंगे	
	(२) सम्पत्ति का सदुपयोग करो	
१०.	भक्तिसुधा	१६
	(१) जतुबाई की जीवन अभिलाषा	
	(२) बाई का संकल्प पूर्ण किये	
	(३) वरवतबा की शूरवीरता	
	(४) श्रीजी महाराज की कृपा	
	(५) अच्छे लग रहे हो राजेन्दर	
११.	प्रश्नपेटी	१९
१२.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

मनुष्यदेह परमेश्वर की कृपा से मिली है । "बडे भाग्य मानुषतनपावा । सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थनगावा ।" भगवत् कृपा से ही यह शरीर मीली है - इसलिये भगवान की भक्ति करके आत्मकल्याण करना चाहिए । यह शरीर केवल आत्मश्रेय के लिये मिली है। लेकिन अज्ञानी जीव मोक्ष के मार्ग से हटकर जगत के नाशवंत पदार्थों के पीछे मनुष्यदेह बरबाद कर देता है । बाद में तो वह चौरासीलाख योनियों में भटकता रहता है । सत्संग एवं थोडी भगवतकृपा हो जाय तो यह जीव भक्ति में जुड जाता है । परन्तु मोहवश उस भक्ति के फल को धन, सम्पत्ति, पुत्र, कलत्र, यश, कीर्ति की प्राप्ति में लगा देता है । भक्ति के प्रताप से कुछ ज्ञान आजाय या सामर्थ्यवान् हो जाय तो वह व्यक्ति छाती फुलाकर घूमने लगता है । एवं स्वयं को कच्छ काला तालाब के खजी भक्त की तरह मानने लगता है, इसके साथ अपनी जयजयकार कराने में लगजाता है परिणाम स्वरूप स्वयं वह भगवानको भूल जाता है । जब तक भक्ति या सामर्थ्य नहीं तब तक दास का दास एवं ज्ञान-वैराग्य एवं त्याग का फणनिकाल कर चलता है । जैसे त्याग-वैराग्यकी स्वयं मूर्ति बन गया हो ऐसा वह भगवाधारी स्वयं को भगवान मानने लगता है । प्रथम ऐसा वैराग्य का दंभ एवं ढोग करता है जैसे स्वयं भगवान की कथा-वार्ता करनी हो तो माइक में भी कहीं स्त्रियां मेरी आवाज न सुनले इसका ध्यान रखता है । कारण यह कि भगवान की आज्ञा का भंग हो जायेगा ऐसा सभी को समझाता है । लेकिन जब समाज उसे थोडा मानने लगा तो बड़े-बड़े थीयेटर जैसे भवन बनाने के लिये धन-स्त्रीका त्याग करने वाला वह स्वयं धन सम्पत्ति के लिये अनेक प्रकार के अधर्माचरण एवं षडयंत्र करने लगता है । बाद में पुजाने के लिये मान प्रतिष्ठा के लिये सभी प्रकार की आज्ञा का उल्लंघन करके केवल जहाँ स्त्रियां हों वहीं पर भगवतवार्ता का आनंद अपनी वैखरीवाणी द्वारा भजन के पद गाकर भगवत रंजन की जगह जन रंजन करने लगता है । धन-स्त्री के त्याग की बात करने वाला देश-विदेश में से करोडो रुपये सरकार को तथा भक्तो को वर्गलाकर या बेवकूफ बनाकर धन इकठ्ठा कर लेता हैं । इसके बाद पैसे के बल से प्रचार करके भगवान की तरह पुजाने लगता है । स्वयं की आरती, अभिषेक एवं उत्सव करवाने लगता है । अपना भोग लगवाकर भोले भक्तों को भरमाकर उनमें बंटवाता है और कहता है कि इसी में कल्याण है । ऐसे अधोगति मार्ग से मोक्ष को चाहने वाले भक्तजन सावधान रहें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

फरवरी-२००७

१. वरसोडा (ता. माणसा) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

३. रिद्रोल (ता. माणसा) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री महेन्द्रभाई मगनलाल दवे के यहाँ पदार्पण-सेटेलाईट.
धर्मवंशी परिवार के सेवक लक्ष्मणभाई जीवाभाई चावडा के यहाँ विवाह प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती एवं आशीर्वाद हेतु पदार्पण । स्वामिनारायण बाग (स्टाफ क्वाटर्स) मेमनगर ।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण ।

५. मोरबी (सनाडा रोड) शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयं अपने हाथों से किये ।

६. मोणासा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसरपर पदार्पण ।
लुणावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में यज्ञ प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री विनोदचंद्र चिममनलाल सोनी के यहाँ पदार्पण-सेटेलाईट.

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

८. श्री विष्णुभाई जोईताराम पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप ।
श्री शंकरसिंह कालुसिंह राणा के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, नवा धरमपुर ।
श्री कांतिभाई आंगडिया के यहाँ पदार्पण शाहीबाग ।

९. श्री परसोत्तमदास कालीदास पटेल के यहाँ पदार्पण, लवारपुर ।
श्री जयंतीभाई जीवणभाई ठक्कर के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, इसनपुर ।
श्री दशरथभाई सेंधीदास पटेल के यहाँ पदार्पण - राणीप ।

१०. आधोई (कच्छ) में पदार्पण ।

११. श्री अरविंदभाई मगनलाल पटेल के यहाँ पदार्पण एस. जी. हाईवे ।

१४. श्री कमलेशभाई भीखाभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा ।

१६. श्री दुष्यन्तपी. ठक्कर के यहाँ पदार्पण घाटलोडीया ।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका सत्संग सभा एवं गांधीवाडा मंदिर में कलश स्थापन प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर कल्याणपुरा (माणसा) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री नरेन्द्रभाई कांतिलाल ठक्कर के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, नाराणपुरा ।

१९. चराडवा श्री स्वामिरायण मंदिर में ठाकुरजी के पाटोत्सव एवं अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण ।

२०. सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव महाभिषेक अपने हाथों से वेद विधिपुरस्सर किये ।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज की पुनः प्राणप्रतिष्ठा श्री सुरेन्द्रभाई पटेल (विशालावाला) के यजमान पद पर अपने हाथों से सुसम्पन्न किये । श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव एवं सुवर्ण वेष्टित सिंहासन का उद्घाटन अपने हाथों से किये ।

२२. कांकरिया रामबाग श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी एवं बाल स्वरूप कष्टभंजन देव के पाटोत्सव अभिषेक तथा ब्रह्मभोज के शुभ अवसर पर पदार्पण। सायंकाल खाण (राज.) गाँव में पदार्पण ।

२३. खाण (राज.) गाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद् हाथों से किये ।

२४-२५. भुज (कच्छ) में पदार्पण ।

२६. घाटलोडीया अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२८. नारायणपुरा डी.के. पटेल होल में पी.पी. स्वामी के कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के विषय में जो नियमानुसार प्रति वर्ष फरवरी महीने की अंतिम तारीख के बाद प्रकाशित होनेवाले प्रथम अंक में स्पष्ट किया जा रहा है ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शा. स्वा. निर्गुणदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शा.स्वा. निर्गुणदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के भोजनका प्रसाद कुछ समय से शुरु किया गया है । तो जो भावुक श्रद्धालु हरिभक्तको ठाकुरजी को शाम को भोजनका प्रसाद करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के भोजन की प्रसादी नही दी जाती है ।

श्री हरिनो प्रसादीनो पत्र

लिखावित स्वामी श्री सहजानंद स्वामी महाराज जत सत्संगी बाई-भाई समस्त नारायण वांचजो, बीजुं लाववां कारण एम छे के अयोध्याप्रसाद तथा रघुवीरप्रसाद ए बन्ने तमारा सर्वेना तथा परमहंस सर्वेना गुरु कर्या छे, तेमनी आज्ञा मां तमारे सर्वेने रहेवुं ने पोतपोतानी सामर्थी प्रमाणे अन्न-वस्त्र करीने एनी चाकरी करवी अने पोताने आपत्काल पड्यो होय तो पण एनुं कर्ज काढवुं नहीं तथा एमना मंदिरमांथी करज साढवुं नही एवं वस्त्र अलंकार तथा तांबा पीतल के वासण एवं बडद-घोडी गाडा गाडी ए आदि जे वस्तु ते अयोध्याप्रसादजी ना होय तथा ठाकुरजी नां होय ते पोताना घरकाम सारु तथा कोईक ने सारु मांगीने क्यारे लेई जावा नहीं, केम जे ठाकुरजीना जे पदार्थ तथा पोताना गुरुना जे पदार्थने तो पूजवा योग्य छे, पण ते पोताना काममां वापरवा योग्य नहीं, अने जो वापरे तो तेनो मोटो दोष लागे । बीजूं पोताने घर विवाह आदिक मंगल प्रसंग होय तो तेनी कंकोतरी अमारी ऊपर तथा अयोध्यावासीऊपर तथा मंदिरके अधिकारी ऊपर लखवी नही, तथा पोताने घेर चरण होय तेनी काणोतरी पण लखवी नहीं. बीजूं आजे सर्वो वातलखी छे ते व्यवहारमार्ग नी छे. ते जो ठाकुरजी साथे पोताना गुरु साथे करे तो लीधा दीधामां एमनी साथे बाद विवाद जरुर थाय तारे एमनुं अवगुण आवे पछी ते पापे करीने परलोकमां एनुं अतिशे भुंडु थाय अने हमणे आलोकमां एनी अपकीर्ति थाय ने माणसमां लाज जाय, बीजुं सत्संगीने अमारे दर्शने आववुं होय तथा ठाकुरजीने दर्शने तथा आचार्य दर्शने तथा साधु दर्शने आववुं होय तारे मार्गमां सत्संगीने घेर जम्यानी ताण्य करे तो पण जमवुं नही ने पोतानी गांठनुंज खावुं बीजुं जे सत्संगीने तथा परमहंस ने ओलखता न होइये तेने पोताने घेर उतरवा देवा नहीं, ते तेनो विश्वास करवो नही ने अमारे नामे तथा परंमहंसने नामे तथा आचार्यने नामे कांइक पदार्थ मांगे तो देवुं नही तथा तेने ओलखता न होइए ने तेओं अमारी मोरछापनो कागज लावीने कांइक मांगे तो पण तेनो विश्वास करवो नहीं ने कांइए देवुं नही अने जेने ओलखता होइए तेनी पासे पण आज दिने मोर नो जे अमारा मोर छापनो कागल होय ते खोटा अने अमो आजदिन थी जे मोरछापनी कागल लखशुं तेमा दिवस नी अवधि लखशुं ते अवधि प्रमाणेज मानवो पण ते उपरांत मानवो नहीं । बीजुं आ कागल मा जे जे वार्ता लखवी छे तेमां बे फेर पडशे ते अमारो सत्संगी नथी, वह वचन द्रोही गुरुद्रोही है । बीजुं आ बात नी सर्वे सत्संगीने परस्पर खबर करावजो, ए भलामण सर्वे साधु ने तथा सर्वे सत्संगीने छे. संवत १८८५ नो महावद-१२ लखितं शुकमुनिनी नारायण वांचशो ॥ श्रीः ॥

बीजुं जे सत्संगीने ब्राह्मण पासे कथा वंचावतीं होय तो ते ब्राह्मण पासे कथा वंचाव्यानी भलामणनो मोरछापनो कागल होय ते पासे कथा वंचाववी पण बीजा पासे वंचाववी नहीं ।

यह श्रीहरिका लिखाया हुआ प्रसादी का पत्र प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के संग्रह में से प्राप्त हुआ है । यह पत्र सन् १९४१ में दीवानी कोर्ट में फस्ट अपील नं. ६२/९६ में एकजीविट नं. ६२ के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद

- गोरधनभाई सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

मंदिर के पूर्ववर्ती इतिहास की तरफ देखा जाय तो पेशवा सरकार ने जो श्रीहरि का द्रोह किया था उसके परिणाम स्वरुप अहमदाबाद से पेशवा सरकार का अस्तित्व ही खत्म हो गया। अहमदाबाद में उस समय अंग्रेजो का शासन आ गया। अहमदाबाद के तत्कालीन कलेक्टर सर एन्ड्रयु डनलोप थे। वे बडे बुद्धिशाली थे। भारतीय भाषा का थोडा ज्ञान था। फिर भी दो भाषा के जानकर मोतीराव को अपने पास रखते थे।

उस समय सहजानंद स्वामी के एक अग्रगण्य संत मुक्तानंद स्वामी की देखरेख में कुछ संत दरियाखान के घुमट में रहकर संस्कृत का अभ्यास करते एवं भजन करते थे। शहर के भिन्न-भिन्न भागों से भिक्षा मांगकर लाते यह देखकर अंग्रेज कलेक्टरने अपने सेवक को बुलाकर कहा कि इन सौम्य संतो को बुलाकर लाओ। सेवक बुलाकर लाया कलेक्टर ने पूछा आप लोग कौन हैं ? आप के गुरु कौन है ? इसतरह आपलोगों के कपडा पहनने का क्या कारण है ? यह सुनकर स्वामीने हिन्दी में उत्तर दिया। उत्तर सुनकर एवं स्वामी के दर्शन मात्र से कलेक्टर का मन शांत हो गया। सात्विक भावना का उदय हो गया। स्वामीने श्रीहरि के सर्वजीव हितावह समाज के उद्धार का परिचय दिया। यह सुनकर कलेक्टर प्रभावित हो गया। इस के साथ ही श्रीहरि के सन्निकट के कुछ बडे लोगों द्वारा प्रभावित होकर अहमदाबाद में महाराज को आने के लिए पत्र लिखवाया। पत्र मिलने के बाद श्रीहरि अहमदाबाद के लिये गढडा से निकल पडे। जेलपुर एकरात्रि रुके। चंडोला तालाब के किनारे आते समय विश्रांति लिये।

अहमदाबादमें पहले से ही सूचना आगयी थी। स्वागत के लिये संपूर्ण शहर सजा दिया गया था। दुर्जनो के पेट में ईर्ष्या, राग, द्वेष की होली जलने लगी थी। साहब के साथ रहने वाला मोती राव भी ऐसा ही था, उसके मन में भी पाप सवार होगया, सोचने लगा कि स्वामिनारायण की पूरे शहर में आज जय जयकार होने लगेगी। वह शहर में न आ सके ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। अब वह साहब का कान भरने लगा - स्वामिनारायण तो ढोंग-ढकोसला करके धर्म के नाम पर एक फौज एकत्र किया है। उसे राजा बनने की महेच्छा है। इसीलिए प्रजा को जागृत करता है। प्रजा भोली है, आप तो जानते है, आपके ऊपर जनता का बल प्राप्त करके आक्रमण करदेगा। तब आप क्या करेंगे ? इसलिए पहले से आप सावधान हो जाइये। शहर के बाहर से ही उसे विदा करना उचित होगा। मेरी बात झूठी नही है। आप जानकारी कर लीजिए कि इस के पास काठी दरबारोकी सेना है या नही ?

मोतीराव की बात सुनकर साहब के मन में भ्रांति हो गयी और शहर के बाहर ही मिलने का निश्चय किया। बाद में घोडेपर सवार होकर चंडोला तालाब के पास मिलने पहुंच गये। दूर से हथियार धारी काठियों को देखकर साहब के मन में शंका हुई कि मोतीराव जो कह रहा था वह सत्य हो, फिर भी एकाएक उसके मन में परिवर्तन जैसे हुआ और प्रभु के चरण में गिर पड़ा। यह प्रभु का चमत्कार ही था।

घटना इस प्रकार की है कि एकबार साहब जंगल में शिकार खेलने गये उस समय उनके सामने सिंह आगया संयोग वश उनकी पिस्तौल में एक ही गोली थी, उन्होनें गोली चलादी लेकिन सिंह को नही लगी, सिंह इनके ऊपर आक्रमणकर दिया, भगवान की इच्छा से इन्होंने देखा कि कोई अव्यक्त शक्ति तेजोमय स्म में रक्षण कर रही है, परिणामत: वह सिंह वहाँ से चला गया, वही प्रकाश वही तेज, वही दिव्य शक्ति का स्मरण करते घर वापस आये, आज उसी स्वस्म को सामने देखकर अपने रक्षण करने वाली दिव्य आकृतिकी याद करने लगे। इस में उसमें कोई अंतर नही है। बाद में श्रीहरिने साहब के हाथमें चित्र बनायाहुआ कागज दिया जिसमें साहब के साथ जंगल की घटना का चित्रण किया हुआ था। साहब मन में विचार करने लगे कि उस समय तो मैं अकेला ही था, यह चित्र तादृश कैसे कोई बना सकता है। उनके मन में दृढ

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

सत्संग में जिज्ञासु बहुत होते हैं

- डॉ. हरजी केराई (अंजार-कच्छ)

पुरानी वात अभी दिमागमें उतरी न हो और नयी बात जानने की इच्छा वाले को जिज्ञासु कहते हैं। दोपहर का खाना अभी पचा न हो साम को खाने में जल्दी करे, दूसरे के घर के नये पक्वान्नो को खाने की इच्छा रखे। भारत के विषयमें सम्पूर्ण जानकारी न हो तो भी जर्मनी के कुछ शहरों का नाम जान लिया हो तो सारे जगत की बात जानने जैसी वात करता है, जैसे वहीं पर रहा हो।

सत्संग में भी कुछ ऐसे हे जो शिक्षापत्री के एकाध श्लोक को जान लिये हों वे अपने को सम्पूर्ण साक्षर मानते है। वचनामृत को हाथ में लेकर नये वचनामृत को वाचना। सम्वत् दरबार या श्रीजी के वस्त्रों का वर्णन तो प्रत्येक वचनामृत में होता है इसलिये उसे वांचने की आवश्यकता नहीं। वचनामृत पूरा हुआ कि सत्संगिजीवन वह समझ में आया या नही जैसे तैसे पूर्ण करके दूसरा शास्त्र हाथ में आ जाता है।

इस प्रकार स्वामिनारायण सम्प्रदाय की दो-चार शास्त्रो को वांचकर कुछ शब्दो का ज्ञान करके जैसे सम्पूर्ण वेद एवं शास्त्रो का जानकार अपने को मानने लगता है। स्वामिनारायण संप्रदाय का ककहरा आगया तो स्वयं को सत्संग में परिपूर्ण मानने लगता है। श्रीमद् भागवत्, रामायण या महाभारत जैसे महा शास्त्रों को उसी ढंग से वांच डालता है। अपने संप्रदाय के शास्त्रों की जानकारी हुई नहीं लेकिन अन्य दुरुह शास्त्रों को वांचने चल देता है।

शिक्षापत्री पुनः वांचकर सारग्रहण करके उसके भीतर उतरने या स्वामिनारायण भगवान के आदेश को जीवन में उतारने के लिये श्री शतानंद मुनि विरचित शिक्षापत्री भाष्य का अभ्यास करना टालता है। वचनामृत पुनः वाचना टालता है। लेकिन चारो तरफ यह कहता फिरता है कि मैं स्वामिनारायण सम्प्रदाय का मुख्य शास्त्र एकवार वांच लिया अब बार-बार वाचने में मजा नहीं आता है।

उसे नित्य नया ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा है। उसे कभी शुद्ध ज्ञान प्राप्त हो तो कोई खराब नहीं। जिस किसी तरह स्वीकार करले। उसे ज्ञान की पिपासा है, जिस के लिये वह छाना हुआ पानी पीता नहीं है। सत्संगी के घर का पानी न पीकर अन्यत्र जाकर पानी पीलेता है।

एकबार सत्संग की बात सुनकर पुनः उसे सुनने की इच्छा नहीं रहती। एक कथा एक वक्ता के मुख से सुनने के बाद दूसरी बार कथा सुनने का मन नहीं होता।

वह मंदिर में भगवान का दर्शन करने गया हो तो दूसरी बार वही दर्शन करने की क्या आवश्यकता ? मंदिर में कोई अच्छे संत उसे कहें कि प्रतिदिन शिक्षापत्री वांचो तोवह कहेगा कि स्वामी ? एकबार शिक्षापत्री वांच लिया अब वांचने की क्या आवश्यकता ? शिक्षापत्री में उसकी निष्ठा नही रहती। वचनामृत जैसा ही सत्संगिजीवन, स्तसंगिभूषण का सार निकालता है। गीता-रामायण जैसे शास्त्रों में अपने को साक्षर मानता है। जिससे पुनः वांचने की इच्छा नहीं करता।

अन्य शास्त्रों को वांचकर धीरे-धीरे निराकारवाली वात करने लगता है। भक्तिमार्ग कोभी सगुणमार्ग कहता है। एक समय ऐसा आता है कि सगुण का खंडन करने लगता है और सत्संग से गिरजाता है। ऐसा कहने लगता है कि भगवान तो घर में भी है - बाहर भी है, हर जगह है। तो प्रतिदिन मंदिर जाने की क्या आवश्यकता। घर में चित्र प्रतिमा का दर्शन करके अपने को बड़ा ज्ञानी मानने लगता है। सच्ची शांति मंदिर में कहाँ से मिलेगी जहाँ मनुष्यों की खूब भीड़ होती है। आरती का घंटा बजता है, नगारा बजाता हो, कथा-कीर्तन उच्च स्वर में होता हो, सच्ची शांति तो खेत, बगीचा में है नदी के किनारे है। इस प्रकार भगवान की आज्ञा का उल्लंघन करता है। एक समय ऐशा आता है कि स्वामिनारायण भगवान तो समाज सुधारक थे, भगवान मानने में भी संशय होने लगता है।

सत्संग में ऐसी जिज्ञासा हानिकारक है। इस से यह लोक एवं परलोक दोनो बिगडता है। व्यक्ति गलतमार्ग पर चढ जाता है।

ऐसा जिज्ञासु नित्य नई खोज में लगा रहता है। वह रोज सोता है। वही चप्पल, वही जूता पहनता है। रोजनये कार्यक्रम कोदेखता है। उसमें उसकी जिज्ञासा नहीं होती। केवल शास्त्रो में, सत्संग मे, भक्ति में जिज्ञासा होती है। जिससे ऐसे व्यक्ति का पतन होजाता है।

बहुत बड़े साधु

- चन्द्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

भगवान हमें पुत्र दें तो अच्छा । उसी के सहारे जिन्दगी पूरी हो जायेगी । चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं । एक हाथ से देते हैं तो दूसरे हाथ से ले लेते हैं ।

वडोदरा शहर में मांडवी विस्तार में तीन स्त्रियां पानी भरकर वात करते हुए जा रही थीं । सदा नाम की स्त्री गर्भवती थी वह थोडे समय पहले विधवा हो गयी थी । उसका उसे दुःख था ।

क्या बात है बहन ? पीछे आते हुए एक तपस्वी ने पूछा । तुझे स्त्रियों की बात से क्या मतलब जो पूछ रहा है ? तूं अपना रास्ता पकड़कर शांति से चला जा, एक स्त्रीने कहा ।

बहन ? मैं इस स्त्री का हित चाहता हूँ । इसलिये पूछता हूँ । योगी जैसा दिखाई देता हुआ तपस्वीने उस ब्राह्मण स्त्री की तरफ निर्देश करते हुए कहा । भगवान की इच्छा से मेरा आशीर्वाद इसकेलिये कारगर होगा । मेरे आशीर्वाद से इसके आंगन में बालक खेलेगा । लेकिन मेरी एक शर्त है ।

एक सखी नाराजगी के साथ डांटती हुई आगे बढ गयी । परंतु सदा एक दूसरी सखी के साथ युवक साधु के सामने देखते हुए खड़ी रही । उसके मन में श्रद्धा का संचार हुआ । उसने पूछा साधु बावा ? आपकी क्या शर्त है । बेटा जब बड़ा हो जाय तो मुझे देना होगा । आप कौन है ? कहां रहते हैं ? हम तो बनवासी हैं, हमारा कोई ठिकाना नहीं है ।

सदा बहन को हुआ कि पुत्र हो और उसे साधु ले जाय, तो मेरे जीवन का आधार कौन होगा । किसके सहारे मैं जीवन जी सकूंगी ? यह विचार करके चिंता मग्न हो गयी । दूसरी स्त्रीको साधु कुछ चमत्कारिक प्रतीत हुआ, उसने सदा से कहा कि तूँ हाँ कह दे । जब बडा होगा तो देखा जायेगा । भविष्य में कौन किसको मिलता है ।

योगी महाराज आप आशीर्वाद दीजिए । जब आप वेटा मांगेगे तब आपको दे दिया जायेगा । लेकिन बेटे को प्रेम दीजियेगा । योगी महाराज आशीर्वाद देकर चले गये । लेकिन जाते जाते कहते गये कि बेटे का नाम जगन्नाथ रखना ।

सदा घर आई, घडे को नीचे रखकर विचार मग्न हो गयी । वह युवान साधु कौन होगा ? लेकिन मुखपर तेज था, यशस्वी लग रहा था । सुन्दर स्वस्थ था । मेरा मन कहता है कि उसके आशीर्वाद से पुत्र होगा । वह लेने आयेगा तो पुत्र को नहीं दूंगी ।

समय वीतते सदा ने पुत्र को जन्मदिया । तेजस्वी बालक देखर सदा खूब प्रसन्न हुई । उसका लालन पालन बडे प्रेम से करने लगी । माथे पर हाथ फेरते हुए कहती बेटा मेरे जीवन के तुम प्रकाश हो, बडा होकर विद्वान सद्‌गुणी, भगवान का भक्त बनना ।

स्वामिनारायण भगवान डभाण में यज्ञ कर रहे थे । एक दिन सभा में श्वेत वस्त्रधारी श्रीहरि श्वेत ऊँचे आसन पर विराजमान थे । सर्वांग में दिव्य शोभा निखर रही थी । सभी भक्त जन दिव्य शोभा को देखकर आनन्दित हो रहे थे । यथा योग्य सेवा कर रहे थे । स्त्रीपुरुष अपनी मर्यादा में आजा रहे थे । उसीमें एक प्रौढा महिला श्रीहरि को अपलक दृष्टि देखे जा रही थी ।

हे... सदा बा यहाँ आओ यहाँ आओ । अगल बगल सदा बा देखने लगीं कि यहाँ मेरा नाम कौन ले रहा है, मेरा नाम किसे पता । तब भगवान स्वामिनारायणने कहा मैं नाम ले रहा हूँ । यहाँ आओं । उस समय सदा बा के आनंद की कोई सीमा नहीं रही । सदा बा ने बेटा से कहा बेटा चलो आज महा प्रभु तेरे मस्तक पर हाथ रखेंगे ।

कैसी हो सदा बा ? कुशल तो है न ? हमेंआप पहचान रही हैं । सदा बा अतीत की याद करती हुई एकटक प्रभु को देखे जा रही थी । । सदा बा ने कहा आप को कभी नहीं देखी हूँ । तब श्रीहरिने कहा याद करो, जब वडोदरा में मांडवी में तीन बहनो के साथ घड़े में पानी लिये आप जा रही थीं उस समय पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया था । और यह भी कहा था कि बेटे का नाम जगन्नाथ रखना । बड़े होने पर हमें सौंप देना । आप वचन भी दी थीं ।

सदा बा को सम्पूर्ण याद आ गयी । वह किं कर्तव्य विमूढ हो गयी अपने अपराध का स्मरण करके कहने लगी प्रभु ? मैं उस समय आप को

जैसा तैसा बोली थी आप क्षमा करें । मैं जगन्नाथ को आप के चरण में अर्पण करती हूँ । बड़ी कठोरता के साथ आज मां का दिल अपने बेटे को अपने से अलग किया । सदा बा ने महाराज से कहा महाराज ! इसका ध्यान रखियेगा ।

अरे मां ! तुम्हारा बेटा तो मेरा दाहिना हाथ बनेगा । इसकी थोड़ी भी चिन्ता नहीं करना ।

सदा बा बेटे के मस्तक पर चन्दन का लेपन किया और प्रभु के हाथ में पकड़ा दिया । बाद में सदा बा ने कहा बेटा अब तूं निर्भय हो । तीनो लोक के नाथ की गोंद में बैठा है ।

यज्ञ पुरा करके श्रीहरि जगन्नाथ को साथ लेकर गढडा गये । थोडे समय के बाद जगन्नाथ को साधु की दीक्षा दिये और कहे कि अब आप मुक्तानंद स्वामी के पास जाइये । वे ही आपका नाम रखेंगे । वहाँ जाकर मुक्त मुनि से कहा कि हे स्वामी महाराज ने आपके पास भेंजा है, आप ही मेरा नाम रखेंगे । हे महापुरुष श्रीहरि की प्रेरणा से हम आपका नाम शुकानंद रखते हैं ।

शुकानंद स्वामी किस प्रकार साधु बने इस विषय में अन्य भी प्रमाण मिलता है । शुकानंद स्वामी डभाण गाँव के निवासी थे । विद्याभ्यास डभाण में ही किये थे । स्वयं मुक्तात्मा थे जब साधु संत आते तो उनकी सेवा करते । एकवार श्रीजी महाराज डभाण आये । सभा में कथा करवा रहे थे । उसी समय श्रीजी महाराज प्रश्न पूछते । व्यासजी उत्तर करते । उत्तर नहीं आने पर श्रीजी महाराज स्वयं समाधान करते । यह देखकर जगन्नाथ के मन में हुआ कि प्रभु के सामने मैं कथा करुँ तो कितना अच्छा होता । यह विचार निरन्तर आने लगा । एक बार शुकानन्द १५ वर्ष की उम्र में घर छोड़ कर निकल पडे ।

दादा खाचर के दरबार में श्रीजी महाराज विराजमान थे । संतो से कह रहे थे कि आज श्रीमद् भागवत पुराण के वक्ता स्वयं शुक देवजी यहाँ पधार रहे है । इसलिये उनका स्वागत करने के लिये सभी चले । सभी श्रहरि के साथ चल दिये । नाना प्रकार के विचार करते हुए कि शुकदेव उत्तम योगी होंगे, बडे बाल होंगे, बडी दाढी होगी, माला जपते होंगे, अवधूत वेश होगा, वृद्ध होंगे ऐसा विचार करते सभी चले जा रहे थे । महाराजने कहा हम इसी तालाब के किनारे बैठते है । आप लोग स्वागत करके ले आइये । संयोगवश भक्त-संत जैसा विचार किये थे उससे विपरीतही था क्योंकि उनके विचार में दाढी-बाल-वृद्ध तपस्वी का ध्यान था । सामने से वे निकलकर जहाँ महाराज बैठे थे वहाँ आगये । महाराज को देखकर जगन्नाथ दंडवत् प्रणाम करने लगे । श्रीहरि उन्हे उठाकर गले लगालिये और कहे कि हम आपके स्वागत में आये थे । कुशल क्षेम पूछ ही रहे थे कि सेवक जो स्वागत के लिये गये थे वापस आये और कहने लगे महाराज ! हम बहुत दूर तक चले गये लेकिन शुकदेवजी नहीं मिले । महाराजने कहा देखो एही शुकदेवजी हैं । पार्षदोने कहा महाराज हम किसी दूसरे विचार में थे । ये सामने से निकले लेकिन विचार वैचित्र्य के कारण पहचान नहीं सके ।

महाराजने मूल ब्रह्मचारी से कहा ये ब्रह्मदेव अपने पास आये है । अभी आप अपने पास रखिये । कुछ समय वीतने के बाद जगन्नाथ ने मूलजी ब्रह्मचारी से कहा कि हमें त्यागी होना है, तब मूलजी ब्रह्मचारीने महाराज के पास लेजाकर त्यागी की दीक्षा दिलादी और नाम गोविन्दानंद रखा गया ।

जगन्नाथ भट्ट थोडे समय तक ब्रह्मचारी रहे । उसी काल में स.गु. गोपालानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी जैसे संतो के सम्पर्क में थे । उनके ज्ञान-वैराग्य-भक्ति इत्यादि देखकर काफी प्रभावित हुए । परिणामतः साधु की दीक्षा लेने का विचार कर लिये । सुरा खाचर से जगन्नाथ भट्ट का बहुत प्रेम था । जगन्नाथ भट्टने सुराखाचर से कहा किआप महाराज से कहिए की जगन्नाथ भट्ट साधु की दीक्षा चाहते हैं। सुराखाचरने महाराज से कहा ! महाराज ने कहा वे तो ब्रह्मचारी की दीक्षा लिये थे । हाँ महाराज ! अब वे साधु के साथ रहना चाहते हैं । बडे संत की सेवा करके अपना हित चाहते हैं । तो उनसे कहिए कि मुक्तानंद स्वामी के पास जांय । स्वामी उन्हे साधु के वस्त्र पहनाये, बाद में दोनो हमारे पास आवें । सुराखाचर एवं गोविन्द ब्रह्मचारी को मिलाकर महाराज की बात कही, बाद में दोनो महाराज के पास गये । महाराज ने साधु की दीक्षा दे दी और मुक्त मुनि से कहा अब आप इनका नामकरण कीजिए । हे महाराज !

इनका नाम शुकानंद रखते हैं ।

स्वामी ! आपको धन्यवाद है । आप सब कुछ जानते है, ये पूर्व में शुकदेवजी ही थे । इनका नाम आज सार्थक हुआ ।

शुकानंद स्वामी ने गोपालानंद स्वामी नित्यानंद स्वामी के पास संस्कृत का अभ्यास किया । बाद में महाराज ने शुकमुनि के पास से गोपीनीय पत्र लिखना, कीसी प्रकार का लेख हो, सभी उन्हींसे करवाते वचनामृत का लेखन कार्य शुकमुनि ने ही किया । श्रीहरि जब तक पृथ्वी पर थे तब तक उन्हीं की सेवा में रहे । स्वयं संस्कृत गुजराती के बहुत सारे ग्रन्थ लिखे । मंजुकेशानंद स्वामीने अपने नन्दमाला नामक पुस्तक में शास्त्रवेत्ता सुजाण शुकमुनि के लिये लिखा है ।

ये शुकमुनि बहुत बडे साधु है । जब से मेरे पास आये साधुता में उत्तरोत्तर निखारआता गया । इसलिये मुक्तानंद स्वामी जैसे है । इसप्रकार कहकर श्रीजी महाराजने उनकी प्रशंसा की है ।

एकवार श्रीजी महाराज को नियम लिखवाना था, तुरन्त शुकमुनि को बुलवाये, जो बुलाने गया वापस आकर कहा शुकमुनि को बहुत तेज ज्वर है । फिर भी उन को कीसी भी तरह से यहाँ लेकर आओ । जिस किसी तरह से लाया गया । शुकमुनि ! यह अध्यादेश आप लिखडालिये, लेकिन शुकमुनि की शरीर ज्वर से जल रही थी । लिखने की स्थिति नहीं थी । हे महाराज ! मेरी शरीर कांप रही है, चेतना शक्ति बिल्कुल नहिवत् है । प्रभु के मुखारविन्द को देखते हुए कहा ।

हे मुनि ! आप धीरे धीरे लिखे सब ठीक होजायेगा । शुकमुनि कांपते कांपते कलम हाथ में लिये और लिखने लगे । अब धीरे-धीरे शक्ति बढने लगी । सम्पूर्ण अध्यादेश लिखा गया । बाद में उन की शरीर पूर्ण स्वस्थ हो गयी ।

श्रीहरि के धाम में जाने के बाद स्वामी काफी दुःखी हुए । एक दिन सभा में महाराज को दर्द भरी प्रार्थना करते हुए कहा कि आप चले गये मुझे निरोगी बनाने का आशीर्वाद दे गये अब आपके विरह को सहा नही जा रहा है, आप अपना आशीर्वाद वापस लेलीजिये । भगवान की इच्छा से शुकमुनि पुनः १२ वर्ष तक ज्वर से पीडित रहे और वेदना सहते रहे ।

सम्वत् १८२५ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अमावास्या के दिन श्रीजी महाराज उन्हे अपने धाम में ले गये ।

पृष्ठ ६ से आगे.....

श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद

विश्वास हो गया कि स्वामिनारायण कोई साधारण पुरुष नही हैं, ये परमात्मा हैं । पुनः नमस्कार किये । बडे उत्साह के साथ शहर में लाया गया उत्सव मनाया गया । मोतीराव का प्रयास निष्फल हो गया ।

कलेक्टर भद्र में श्रीजी को लाकर पदार्पण करवाया । उस समय महाराज अहमदाबाद में एक मास तक रहकर मुमुक्षुओं को अपना आश्रित बनाया । कलेक्टर साहब प्रतिदिन सायंकाल महाराज के पास आकर बैठते थे । एकदिन कलेक्टर श्रीजी महाराज से मंदिर एवं सन्तों का निवास बनाने की विन्ती की । उस समय जमीन के लिये नवावास पाठकवाडी को पसंद किये । उस जमीन को कलेकटर ने (यावच्चंद्र दिवाकरौ) जबतक चन्द्रमां सूर्य है तब तक के लिए लिख कर दिया ।

थोडे समय के बाद श्रीजी महाराज ने इस स्थल पर शिखरी मंदिर बनाने की आज्ञा अपने शिष्य आधारानंद स्वामी को दिया । स्वामी अपने शिष्यों के साथ अमदाबाद आ गये । आनंदानंद स्वामी मंदिर बनाने की चिन्ता में रात्रि शयन करने गये उसी समय भगवान ने उन्हें स्वप्न में जहाँ मंदिर बनाना है वहीं पर स्वर्ण का मंदिर दिखाया । इस प्रकार सोने का मंदिर हम बना सकते है लेकिन हमें भक्तों का कल्याण करना है इस हेतु से भक्तों का सहकार लेकर आप कार्य करें । आनंदानंद स्वामी उस स्वर्णमंदिर को हृदय में उतार लिए । वैसा ही मंदिर बनाने का संकल्प किये और भक्तों के सहयाग से पत्थर, चूना आने लगा । कलेक्टर का भी समय-मसय पर सहयोग मिलता रहा । बाद में अपने अनन्य शिष्य, शीघ्र कवि, ब्रह्मानंद स्वामी को भेजें, उन्ही की देख रेख में अहमदाबाद के बीचोबीच देखते देखते तीन शिखर का मंदिर जैसे जलाशय में कमल खिलता है ऐसे खिल उठा । विसनगर के अंबारा एवं कुबेर इस मंदिर के मुख्य शिल्पी थे ।

(क्रमशः)

आत्मचिंतन अवतार के अवतारी का

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

ईश्वर सद् चिन्तन का आनन्द स्म है। आत्मचिंतन आत्म संयम का प्रथम सोपान है। आत्मज्ञान दूसरा सोपान है। आत्मा का शुद्ध स्वस्म असीम है। परंतु देह के बन्धन में बधा हुआ जीवात्मा अज्ञान एवं आसक्ति के कारण बधता जाता है। आत्मस्वस्म को पहचानने से, ध्यान करने से, आत्म चिंतन करने से, अन्तःकरण में उस परमतत्व को प्रगट करने से, मनुष्य आत्मोन्नति कर सकता है। अंत में जीव को मोक्ष तक पहुंचा सकता है।

आत्मचिंतन द्वारा आने वाले काल की चिंता करे वह त्यागी नहीं बल्कि रोगी है। इसलिये आनेवाले कल की चिंता मत करो। आत्मचिंतन द्वारा नये नये विचार आते है। अपना स्वयं का विचार सफलता एवं निष्फलता देने वाला होता है। प्रेम युद्ध एवं क्रांति में केवल तटस्थता की विजय होती है। जीवन में विचार का बडा महत्व है। हम अपने विचारों के प्रपंच में फंस जाते हैं। आत्म चिंतन द्वारा मन में सुंदर वीजारोपण करना चाहिए। वही उत्तमफल का कारण है।

हमेंशा हितकारी, प्रीतिकारी, मंगलकारी कल्पना करनी चाहिए। कल्पना या आत्मचिंतन कार्य करने की एक प्रक्रिया है। चिन्तन करो पर चिन्तन में चिरन्तन मत बनो, स्वप्नों को साकार करो। आत्मचिंतन के लिए एकान्त की शोध करो। चिन्तन से प्रसन्नता का अनुभव होता है। पास्कल कहते हैं "Man's greatness ties in his power of thought." चिंता के बवन्डर में फसे चित्त को चिन्तन के माध्यम से आत्मचिन्तन की तरफ ले जाओ।

हृदय एवं आत्मा के बीच में अपनी आंतरिक विचार धारा का मन्थन करो जिससे नवनीत की प्राप्ति होगी-वही यथार्थ है। नकारात्मक विचारों को दूर करो। विचार की ताकत अकल्पनीय होती है। मानव जो चाहे वह कर सकता है।

विचारों को प्रश्रय देना चाहिए। आत्मचिन्तन द्वारा उसका आदर करना चाहिए। अन्तरात्मा की आवाज को ही अग्रिमता देनी चाहिए। शास्वत आनंद की उपलब्धि आत्मचिंतन द्वारा सम्भव है। चैतन्य आनन्द स्म है। प्रकृति के गुण धर्मो से ऊपर अलग होकर परमतत्व को प्राप्ति करने का सर्वोत्तम साधन आत्मचिंतन है। सर्वोत्तम ध्यान है। कीट-भ्रमर के न्याय से मनुष्य उसी आनन्द का चिन्तन करता है। वह मनुष्य सुख-दुःख स्मी कीट मिटकर आनंद स्मी भ्रमर वन जाता है। यह शास्वत आनन्द आत्मचिंतन या आत्मज्ञान विना शक्य नहीं है। अपनी अपूर्णता का चिन्तन एवं परमात्मा की पूर्णता का चिन्तन करना ही प्रार्थना है।

आधि भौतिक, आधि दैविक, आध्यात्मिक इन तीनो प्रकार की उपाधियो से मुक्ति केवल आत्मचिन्तन से सम्भव है। सच्चा सुख आत्मानन्द में है। आत्मा परमात्मा का अंश है। आत्मार्थी को दुःख कैसा ? देहार्थी को सुख-दुःखानु भूति होती है। वैदिही जनक की तरह सुख दुःख में आत्मचिंतन द्वारा स्थित प्रज्ञ की अवस्था में पहुंच सकता है।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि "आत्मचिंतन व्यक्ति को गमगीन नही लेकिन आत्मानंद प्रदान करता है। प्रभुमय पुस्म सदा आनन्द में रहता है।

आत्म स्वस्म को जो अन्तर से जानता है वह कर्म बन्धन से मुक्त हो जाता है। तत्वज्ञान दर्शन, चिन्तक दर्शक, फिलोसोफी दार्शनिक है। दर्शन जीवन की कला है। आत्मचिंतन द्वारा जीवन दर्शन करने से ज्ञान, शक्ति, आनंद मिलता है। आत्मचिंतन करने से व्यक्ति को ख्याल, आयेगा, मार्ग मिलेगा, लक्ष्य दिखाई देगा। आत्मचिंतन का जितना चिंतन किया जाय उतना ही कम है। आत्मचिंतन इष्टदेव का करना चाहिये।

प्रगति की सच्ची दिशा खोजनी चाहिए। आत्मचिंतन एवं आत्मनिरीक्षण अनिवार्य है। पुस्मार्थ में आत्मचिंतन एवं आत्मज्ञान का सुन्दर समन्वय होने पर पूर्णता होती है। आत्मचिंतन जीवन स्मी नौका के समान है। प्रत्येक कार्य आत्मचिंतन से सरल हो जाता है। सात्विक विचारो वाला कर्मयोग सिद्ध कर सकता है। अपने विचार भले तूं कर लेकिन मेरी शरण में आजा। यही गीता का परम रहस्य है। इस प्रकार का उपदेश देकर भगवान ने मानव को आत्मनिश्चयी बानाया है। शरीर आत्मा के रहने का स्थान है। आत्मा अजर-अमर है। यह आत्मा अगम्य शक्ति वाला है। आत्मा अचिंत्य है। साक्षीभूत है। आत्मदिव्यलोक शासन का मालिक है। आत्मा स्वयं सत् चित आनंद स्वस्म है। इसलिये आत्मचिंतन अमोघ अस्त्र है।

सत्संग सुरभि :

बड़ी शरण महाराजकी

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला

"आप चारो लोग मेरा यह एक वचन मानोगे ?" हाँ महाराज ! आप जैसा कहेंगे वैसा हम करेंगे ? चारो लोग बहुत ही भरोसे के साथ बोले । श्रद्धा और विश्वास के इन वाक्यों से महाराज बहुत ही प्रसन्न हुए ।" आपको बीस दिनो की महोलत देता हूँ । उसी समय मेमका गाँव छोडकर कुटुंब सहित चले जाइए सभी माल सामान लेकर जले जाइयेगा पर यहाँ पर नहीं रहना ।" महाराज तो चले गये । महाराज जब तक जाते हुए दिखाई दिये तब तक उन्हे वे देखते रहे ।

वे चारो जन मेमका गाँव के चार मात्र सत्संगी थे मूलजी शेठ, हंसराज सुतार, शामो अगोलो तथा शामो कणसागरो । महाराज कारियाणी से चलकर मेमका आये थे । केवल अपने भक्त की रक्षा हेतु ।

पंन्द्रह दिन में चारो जन गाँव खाली कर दिये । उसमें से मूलजी शेठ लींबडी गये तथा अन्य-अन्य गाँव में चले गये, फिर भी महाराज की मूर्ति का ही ध्यान करते रहे । इक्कीस वे दिन मेमका गाँव को गायकवाडी फौज आकर लूट ली । महाराज के वचन में जो विश्वास रखेंगे उनका स्वयं महाराज रक्षण करेंगे । मूलजी शेठ लींबडी के शेठ कहाने लगे ।

श्रीजी महाराज जब डभाण गाँव में यज्ञ किये उस समय मूलजीशेठ को हिसाब किताब के लिये महाराज बुलाये थे । यज्ञ में हजारो लोगो की भीड़ थी । इस में कुछ द्वेषी लोग भी आ गये थे । वे अप प्रचार करने लगे कि घी कम हो गया, पैसे कम हो गये । फिर भी महाराज मूलजी शेठ को बुलाकर कहे कि ब्राह्मण लोग जो भी कहें आप सभी में धन बांट दीजियेगा । हमें धन संग्रह नही करना है ।

मूलजी शेठ द्वेषियो की नीति समझते थे । उन्हें जितना गलत प्रचार करना हो करें । मूलजी शेठ धन का सम्पूर्ण लेखा जोखा कर रहे थे । उन्हें ख्याल था कि हमारे पास क्या है क्या नही । धन की कोई कमी नही है । महाराज के पास जाकर कहे कि महाराज आप क्या समझकर कह दिये ..... मूलजी की शरीर क्रोध से कांप रही थी ..... आवाज कांपती निकल रही थी ।

एकांत में लेजाकर महाराज को समझाये कि "आप हमें ऐसा कह रहें हैं तो हम जो धन आया है वह ब्राह्मण में देदेंगे । फिर क्या ? महाराज ने कहा शेठ आप चिन्ता मत करो ब्राह्मण कैसे हैं हमे सब पता है । हमी यदि इनकी अवमानना करेंगे तो ए कहीं के नही रहेंगे । लोक में इनका मान घट जायेगा । क्योंकि यह सभी कार्य ब्राह्मणो के हाथ में है । आगे भी चलता रहेगा । सभी ब्राह्मण द्वेषी भी नही है । इसमें कितने ब्राह्मण श्रद्धावाले एवं विद्वान है । इसमें ऐसे भी विद्वान है जो पूज्य है इसलिये मूलजी आप विना विचारे दान देते रहिये - संकोच मत कीजिये ।

मूलजी महाराज के सामने केवल देख रहे थे । "अरे महाराज मै ही भूल गया था । जहाँ स्वयं पुरुषोत्तम नारायण देने वाले हों वहाँ शंका का स्थान ही नही होना चाहिए था । महाराज हमें केवल हिंसाब-किताब के लिये बुलाये थे मैं तो इन्हें ही समझाने लगा था । शेठजीका रोष एकक्षण में ही ठन्ढा हो गया । आप जितना कहोगे उतना धन दान में दे दूँगा ।

बाद में जितना महाराज ने कहा उतना धन मलूजी शेठ देते गये । शेठ भी नही पूछे महाराज भी नही पूछे कि धन की क्या स्थिति है । हजारो की संख्या में आये हुए ब्राह्मण संतुष्ट हो गये । द्वेषी ब्राह्मण भी धन प्राप्त करके एवं भोजन करके आनन्दित हुए । महाराज का गुणगान करते हुए चल दिये ।

महाराज मूलजी शेठ को बुलाकर कहे किअब आप अपने धन की स्थिति बताइये कितना घट रहा है । कमी होती हो तो शेठ कहें न । शेठ अपनी धन राशि देखने गये वहाँ तो सबकुछ करने के बाद भी सोलह हजार बचे हुएथे । बडे आनन्द में महाराज के पास लेकर आये ।

साष्टांग दंडवत् करके दीन होकर बोलने लगे कि महाराज जितनी अपेक्षा

थी उससे अधिक ही दिखाई दे रहा है। यह सब आपके चमत्कार का फल है। जहाँ प्रत्यक्ष आप विराजमान हों वहाँ कमी सम्भव कैसे ?

विश्वका सबसे बडा यज्ञ हुआ जो निर्विघ्न समाप्त हो गया महाराज की आज्ञा में सेवा करने वाले भक्तजन इतना बडा ऐतिहासिक यज्ञ करने के बाद बची धन राशि देखकर आश्चर्यचकित रह गये ।

जिस सत्कार्य में स्वामी सहजानंद की कृपा हो उसमें कमी कैसे हो सकती है। बल्कि उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है । सुयश एवं कल्याण दोनो की प्राप्ति सहजानंद स्वरूप का प्रताप है।

लाखो की संख्या में उपस्थित मानव मेदिनी आज सहजानंदी स्वरूप के प्रभाव को देखकर विस्मयान्वित हो गयी ।

कोई किंमत ना !

हरि स्मरण विना हैयु जेनु,
ए जन्म की कोई किंमत ना ।
जे राजीपो पाम्यो नहि श्रीहरि साथे
ए हरि भक्तनी कोई किंमत ना ..... ।
भले पाठ-पूजा दिनरात करो,
पण हरि-स्मरण हैये धरो,
जे भक्ति हृदयना भीनुं करे .....
ए भक्ति तणी कोई किंमत ना, हरि ..... स्मरण
अक्षरधामनो ए प्रवासी हो,
पण देव दर्शननो प्यासो हो,
जे नयने ना देव दर्शन करियां,
ये नैनातनी कोई किंमतना, हरि-स्मरणा.....
कोई करे भले कीर्तन मधुरो,
हरिनाम विना ए अधुरा,
ए कर्कश कंठे श्रमज करे,
ए कंठे तणो कोई किंमत ना, हरि-स्मरण.....

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिकमास ज्येष्ठ मास (पुरुषोत्तमास) का भव्यउत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में सं. २०६३ पवित्र अधिक ज्येष्ठ मास (पुरुषोत्तममास) में ता. १७-५-०७ से ता. १५-६-०७ तक एकमहीने तक उत्सव-भव्यता के साथ मनाने का शुभ आयोजन किया गया है । इस प्रसंग पर प्रतिदिन वार्षिक उत्सव के रूप में प्रसंग के अनुसार मनाया जायेगा, सभी सत्संगी दर्शन का लाभ लें इस हेतु से हम सभी सत्संगियों को आमंत्रण भेज रहे है ।

सुज्ञ आत्मीय प्रेमी भक्तजन ? यह पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास तीसरे वर्ष आता है इसलिये इस प्रसंग का यजमान बनने की महेच्छा सभी को होगी । इसलिये सबसे पहले कोठार में आकर अपना यजमान पद लिखवा कर घरका पता अवश्य लिखवायें । इस उत्सव में विविध सेवा का लाभ लेने हेतु अपने नाम को अवश्य लिखवायें ।

नोंट : ता. ११-६-०७ ज्येष्ठ कृष्ण ११ के दिन प्रातः ८-३० बजे सभा मंडप में प.पू. आचार्य महाराजश्री के सांनिध्य में समूह महापूजा का दिव्य लाभ मिलेगा । जिसमें भाग लेने हेतु कोठार में १२५-०० रूपये जमाकर रसीद प्राप्त करलें ।

ली. महंत स्वामी

सत्संग बालपत्रिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

उद्यम करो फल भगवान देंगे

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

इस जगत में जहाँ नजर करिये वहीं काम, ही काम । चीटी भी काम करती है, चींटा भी काम करता है, मक्खियां भी काम करती है । भ्रमर भी काम करता है । गौरैया भी काम करती है । मूष भी काम करता है । आदमी भी काम करता है । चींटी से लेकर हाथी तक सभी काम करते हैं । सभी को अपने जीवन निर्वाह की प्रवृत्ति तो करनी ही पड़ती है ।

इसीलिए स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में कहा है कि पुरुष प्रयत्नशील हो तो उसके ऊपर भगवान की कृपा होती है । जो प्रयत्न रहित होता है उस पर भगवान की कृपा नहीं होती । इसलिये सभी को यथोत्साहप्रयत्न करना चाहिए । भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में लिखा है -

"यथा शक्त्युद्यमः कार्यो
निजवर्णाश्रमोचितः ॥

अपने वर्णाश्रम के अनुसार जो व्यवसाय हो सामर्थ्य के प्रमाण से करना चाहिए ।

इसलिये उद्यम के लिये भगवान के बताये मार्ग का अनुगमन करना चाहिए । जो व्यक्ति दूसरे का देखकर उद्यम करने का प्रयाश करता है, अपने अनुभव-सामर्थ्य का विचार नहीं करता वह परेशानियों से घिरजाता है ।

गुजराती की पुरानी पाठमाला में एक पाठ आता था । जब हैया नही । उस पाठ में भोजन की खोज में एक कौए की कहानी थी। वह अपने आहार की खोज में चारो तरफ भटका लेकिन कुछ लाभ नहीं हुआ । अरे ! तूझे तो लोग खीर-पूडी खिलाते हैं न ? नहीं... नहीं... पन्द्रह दिन तक ही । बाकी ३४५ दिन तो आहार की खोज में भटकना ही पडता है । इतने में एक मोटा तगडा बगला दिखाई दिया । काग ने पूछा अरे भाई तुम क्या खाते हो जो इतने स्वस्थ हो । बगला ने कहा यह जो सामने तालाब दिखाई दे रहा है । इसमें बहुत मछलिया है और मेंढक भी बहुत है । अब बहुत दौडा-दौडी करने की जरुरत नहीं । तुम भी इसी जलाशय में शांति से खड़े रहना । पेट भर आहार मिलेगा तुम भी हमारी तरह से मोटे तगडे हो जाओगे । कौआ विचार करने लगा सही बात है मैं प्रतिदिन २-२५ कि.मी. तक जाता हूँ एनर्जी खत्म होती है फिर भी योग्य आहार नहीं मिलता । बगला तो एक ही जगह शांत बैठता है और पूर्ण आहार प्राप्त करलेता है । मैं भी ऐसा ही करुं यह विचार कर कौआ अपने व्यापार को छोड़कर दूसरे के व्यापार में लग गया । अब तालाब के एक किनारे शांति से बैठकर दृश्य का जायजा लेने लगा । लेकिन बगला का पैर लम्बा होता है और कौआ का पैर छोटा होता है । वह विचार करके कम पानी वाले विस्तार एवं कीचडवाले विस्तार की तरफ गया, वहाँ मछलियां कीचड में कलबला रही थी, इतने में कौए ने उडान भरी और कीचड की तरफ जहाँ मछलियां कलबला रही थी वहाँ आकर ज्यों चोंच मारी त्यों ही उसकी चोंच कीचड में फंस गयी, पैर-पंख ऊपर फडफडाने लगा ।

कपड़ां धोते हुए एक धोबी यह दृश्य देख रहा था । उससे रहा नहीं गया तो कौए को कहा कि -

करता हो सो कीजिये,
और न कीजिये कग ।
माथु रे शेवाल में,
ऊँचा रे बे पग ॥

इसका अभिप्राय यह हुआ कि अपने अनुभव एवं शक्ति के अनुसार ही काम करना चाहिए । दूसरे का अनुकरण करके उसका काम करने जायेंगे तो कौए की हालत होगी । इसलिए इस लोक में सुख एवं शांति प्राप्ति करना हो तो सेवा समर्पण द्वारा सिद्धि की तरफ गति करना चाहिए । दृढ निश्चय रखना चाहिए कि हमारे इष्टदेव हमारे उद्यम का फल अवश्य देंगे । कारण यह कि उद्यम करना हमारे हाथ में है, फल देना प्रभु के हाथ में है ।

•

सम्पत्ति का सदुपयोग करो

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

दो मित्र थे ! उनमें एक सूरवीर

क्षत्रिय था दूसरा पवित्र ब्राह्मण था । वे दोनो मित्र एक दिन जंगल में घूमने गये । वहाँ जंगल में नदी के किनारें एक तपस्वी को देखे । पवित्र ब्राह्मणने कहा "हे मित्र ! वहाँ कोई तपस्वी बैठे है । अरे तूं तो घूमने-फिरने वाले को तपस्वी मानता है । नहीं ऐसा नहीं है, यहाँ जंगल में नदी के किनारे एकांत में घूमने वाला तप क्यों करेगा। तूं देखो तो उसका वस्त्र कितना स्वच्छ है, पवित्र है । वैरागी हो या अघोरी हो तो उसका कपडा कितना मैला कुचैला होता है । चेहराभी मलिन होता है । इनके मुख से तेज भासित हो रहा है । हाँ होगा ? तूं ब्राह्मण है न ? इसलिए यह तुम्हें ख्याल है, हमें क्यां ? चलो आगे चलें। नहीं चलो महात्माजी के पास चलते हैं । वहाँ जाकर हम क्या करेंगे ? अरे महात्मा त्रिकालज्ञानी होते हैं । हमारी भाग्य के विषय में कहेंगे । अरे क्या बात करता है । हाँ चलतो सही । दोनो मित्र उस महात्मा के पास जाकर प्रणाम करते हैं । महात्मा दोनो को आशीर्वाद देते है "कल्याणमस्तु" दोनो मित्र अपने भाग्य के विषय में पूछते हैं । महात्माजी दाहिने हाथ की रेखा देखकर कहते हैं "तुम्हे धन की प्राप्ति होगी उसी से तूं राजा बनेगा ।" वह क्षत्रिय खूब प्रसन्न हो गया । में राजा बनूंगा । बाद में ब्राह्मण अपने हाथ को दिखाया तो महात्माजी चिन्तन करने लगे, बाद में कहे "तुम्हारी मृत्यु नजदिक में है, तूं छ महीने के बाद मर जायेगा ।" यह बात सुनकर दोनो मित्र उदास हो गये । महात्माजी से मृत्यु से बचने की उपाय पूछते हैं । महात्माजीने कहा "ईश्वर इच्छा" यदि भगवान की प्रसन्नता मिले तो सम्भव है कि मृत्यु टल जाय - अन्यथा मरना ही पडेगा । बाद में दोनो मित्र गाँव में वापस आते हैं । यहाँ आकर सभी आप वीती बात बताते है । ब्राह्मण तो अपनी सम्पति बेचकर तीर्थयात्रा के लिए निकल पडता है । तीर्थो में जाकर दान-पुण्य करने लगता है । इधर क्षत्रिय राजा बनता है । सभी उसे - मान सन्मान देते हैं । उसके कुछ खराब मित्र मिल जाते हैं । जो शराब एवं जूआ खेलने की लत लगा देते हैं । संयोगवश एक दिन अपने घुडशाल में खड्ढा खोदता है, जिसमें से हीरा-मोहर निकलता है। क्षत्रिय महात्मा का वचन भूल जाता है । वह सद्उपयोग करना भूल जाता है । व्यसन की गन्दी लत लग जाती है । व्यसन, विलास के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड जाता है । औषधिभी काम नहीं करती । अब उसकी मृत्यु नजदीक दिखाई देने लगी । अपने मित्र एवं महात्मा को गाली देने लगा।

इधर छ महीने पूर्ण होते ही अपने गाँव में वापस आता है भगवान की कृपा से वह दीर्घायु हो गया । पवित्र ब्राह्मण विचार करता है कि मेरा मित्र राजा बन गया होगा । वह मेरी मदद करेगा । लेकिन यहाँ तो उल्टा हुआ । अपने मित्र की यह हालत देखकर बडा दुःखी हुआ । बाद में महात्मा को जंगल में लेने गया, साथ लेकर आया, महात्माजी देखने के साथ ही सभी बता दिये । तेरे कर्म में राजा ही होना लिखा था किन्तु तूने अपने धन का सद् उपयोग न करने के कारण नशा जूआ खेलने में लगा दिया । जिस कारण तुम्हारी यह हालत हुई । तब उस मित्र को अपनी भूल समझ में आ गयी । इस में हमारे मित्र या महात्माजी का कोई दोष नहीं है । हमारे दोष के कारण ही यह सब हुआ था । परंतु अब पश्चात्ताप के सिवाय दूसरा कोई मार्ग नहीं ।

मित्रो ! कैसी यह अद्भुत बात है। स्वामिनारायण भगवान भी कहते हैं कि "चाहे कैसा भी पुण्यात्मा हो यदि संत को पीडा देता है तो उसके पुण्य कानाश हो जाता है । राजा होने को लिखा हो तो भी वह रंक हो जाता है । खराब कर्म किया हो तो भी भगवान तथा भगवान के भक्त की प्रसन्नता मिलने पर कर्म का नाश हो जाता है ।

भाग्य में मांगकर खाने को लिखा हो तो भी राजा बन जाता है । मार्कन्डेय ऋषि की बहुत कम आयुथी परंतु महा पुरुषों के साहचर्य से महात्माओं के आशीर्वाद से चिरंजीवी हो गये । इसलिये क्षत्रिय ने जिस प्रकार धन प्राप्त करके भोग-विलास में उपयोग किया और नाश हो गया वैसा नहीं करना चाहिए । जो ऐसा करता है उसकी शरीर एवं धन दोनो का नाश होता है । इसीलिए तो भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि "द्युतादिव्यसनंत्याज्यं" जूआ आदि व्यसन का परित्याग करना चाहिए । इतना करने से भगवान की भक्ति-सेवा-सत्संग परोपकार बढेगा और ब्राह्मण की तरह संत कृपा से एवं भगवान की कृपा से सुखी बनोगे ।

।। भक्तिसुधा ।।

जतुबाई की जीवन अभिलाषा

- तरलाबहन पोथीवाला

महेसाणा जनपद कडी तहसील डांगरवा गांव श्रीजी महाराज के पवित्र चरणो से अनेकबार पावन हुआ है । जतनबाई, ज्ञानबाई, जीतुबाई, यमुनाबाई, इत्यादि महिला भक्ताओं के स्नेहाधीन होकर परमात्मा श्रीहरि डांगरवा अनेकोंबार पधारे थे ।

किसी समय श्रीहरि लांधणज गाँव से डांगरवा में भक्त वेणीदासभाई के घर गये, श्रीमुकुन्द वर्णी सुंदर रसोई तैयार किये, उस रसोई को जिमकर श्रीहरि दूसरे दिन क्षत्रियाणी जतुबाई नामवाली भक्ता के घर जाने को तैयार हो गये ।

भगवान श्री स्वामिनारायण जयनादघोष एवं वाद्ययंत्रो की सुमधुर आवाज सुनते हुए वेणीदास के घर से बाहर निकले । श्रीजी महाराज माणकी घोडी पर सवार सुंदर वस्त्रों से एवं अलंकारो से सुसज्जित देखकर ग्रामवासियों के आनंद की सीमा न रही, सभी अबीर-गुलाल-अक्षत-पुष्प की वर्षा करके स्वागत किये ।

सम्पूर्ण मार्ग में श्रीहरि की यात्रा सभी को दर्शन देकर कृतार्थ करती हुई जतुबाई के घर पूर्ण हुई ।

जतुबाई तथा उनके चार पुत्र अमरोजी इत्यादि सभी खूब आनंदित हुए । क्षत्रिय परिवार होने से खाने पीने का भले सामान्य रहा हो परंतु श्रीजी महाराज की सर्वोपरि उपासना एवं सत्संग के लिये शूरवीरता आत्मसमर्पित थी ।

जतुबाने प्रेमपूर्वक श्रीहरि को सुंदर आसन बैठने को दिया । ब्राह्मण द्वारा निर्मित भोजन की थाली श्रीहरि के सामने रखा । श्रीहरि उस भोजनको प्रेम से ग्रहण किये बाद में जतुबाने स्वयं एवं अपने पुत्रों को प्रसाद के स्म में दिया । बाई के पुत्रों ने श्रीहरि को एक सुंदर घोडी अर्पण की । जतुबाई खूब आनंद में थी । वर्षो से उनके मन में अभिलाषा थी "श्रीहरि मारा आंगणे पधारे" आज वह महेच्छा श्रीहरिने पूर्ण कर दी ।

अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति स्वयं बाई के घर पधारे और स्वयं बाई महाराज को अपने हाथों भोजन कराई । आज जतुबा महाराज को प्रार्थना करती हुई कही कि "हे प्रभु ! आज मेरी जैसी गरीब के घर पधारकर, घर कोपावन किया है । हे धर्मनंदन श्रीहरि ! मैं तो आपकी हूँ यही जानती हूँ दूसरा कुछ नहीं जानती । इसलिये हे भगवन् ? जब मेरा देहान्त हो तब इसी स्म में मुझे लेने आइयेगा । बाद में अपने दिव्य धाम में अवर्णनीय सुख मिले इतनी कृपा अवश्य करियेगा ।

महाराज जतुबाई की अकिंचत याचना सुनकर तथास्तु कह दिये । उनके चारो पुत्रों को बुलाकर चरणारविंद भेंट में दिये और आशीर्वाद दिये । बाद में महाराज नींब वृक्ष के नीचे थोडा आराम करके भक्तों पार्षदो के साथ यमुनाबाई के घर रात्रिनिवास किये ।

बाई अपने आंगन में श्रीहरि को एक टक देखे जा रही थी । महाराज जब आंखो से ओझल हो गये । तब आंखो में सेअश्रुजल धारा बहने लगी । महाराज आज हमें अनन्त सुख देकर चले गये । अश्रुधारा बहती रही ।

•

बाई का संकल्प पूर्ण किये

- शेठ हंसाबहन नगीनभाई (बावला)

गाँव के हरिभक्त वस्तो रावल की पत्नी स्वर्गस्थ हो गयी । इसलिये उसकी साली घर का काम-काज करने के लिये आई थी । एक दिन वस्तो अपनी भैंस को ८०/- स्मये में बेंच दिया । बाद में अपनी साली से कहा हम अपनी भैंस ८०/- स्मये में बेंच दिये । तब साली ने कहा क्यों बेचदिये, मैं महाराज को दूध पाक बनाकर पिलाने का संकल्प की थी, इसीलिये यहाँ सेवा कर रही थी, अब आप के घर का काम-काज नहीं करुँगी । वस्तो रावल ने कहा आज का दूध हैं । दूधपाक बनाकर महाराज की मूर्ति को भोग लगादे । महाराज अवश्य ग्रहण करेंगे । महाराज कहा करते हैं कि जब भक्त में अतिशय प्रेम हो तो हम मूर्ति में से भी उसे ग्रहण करते हैं ।

यह बात सुनकर बाई खूब प्रसन्न हुई । दूधपाक बनाने के लिये तैयार हुई उधर वस्तो चीनी लेने गया । वहाँ उसे सामने से श्रीहरि आते मिल गये । श्रीहरिने कहा वस्तों कहाँ जा रहे हो, वस्ताने बताया, बाद में वस्ता महाराज को लेकर साथ में आया । बाई को महाराज ने कहा हमें बहुत भूख लगी है, जल्दी रसोई तैयार करो । भोजन तैयार

हुआ श्रीहरि भोजन करने पधारे । बाई बडे प्रेम से महाराज को भोजन कराने लगी । भोजन करके उच्च आसन पर विराजमान हुए, बाद में बाईने मुखशुद्धि दिया । अन्य घुडसवार भी भोजन कर लिये तो महाराज वहाँ से विदाई लेकर चल दिये गाँव के बाहर जाकर अदृश्य हो गये । यही भक्तका प्रेम है । जब भगवान सामने से स्वयंआते है ।

•

वखतबा की शूरवीरता

- रेखाबहन पटेल (ऊंझा)

स्वामिनारायण भगवान एक समय अहमदाबाद पधारे थे, उस समय खोखरा (महेमदावाद) में नथु भक्त केघर प्रभु विराजमान थे । वहाँ प्रभु को मारने के लिये असुरों का समुदाय हथियार लेकर आया । उस समय भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया । इस युद्ध में भगवान की इच्छा से भारस्म असुरों का नाश हुआ । यहाँ का कार्य पूर्ण करके महाराज वहेलाल पधारे । वहेलाल में जेसींगभाई पटेल अमीन पाटीदार खूब शूरवीर भक्त थे । स्वामिनारायण भगवान उन्हीं के घर पधारे, उस समय पटेल घर में नहीं थे । महाराज ने कहा क्यों पटेल घर में नही है ? उस समय उनकी बहन वखतबाने कहा भाई खेत में गये हैं । प्रभु ने कहा हमें पकडने के लिये लश्कर आ रही है । महाराज आप घर में रहिये मैं घर से गाँव के बाहर जाती हूँ । देखती हूँ इस गाँव में कौन पैर रखता है । देखिये तो महिला की कितनी शूरवीरता । माणकी घोडी घर में छुपा कर महाराज एक रूम में विराजमान हो गये । इधर वखतबा साडी को खोंस कर हाथ में सांब लेकर गाँव के बाहर निकल पड़ी । गाँव के बाहर जो भी हो उसके एक एक के मस्तक तोड डालूंगी । इस प्रकार सजकर गाँव के बाहर जाकर खड़ी हो गयी । वहीं पर जेंसीगभाई आ गया । देखते ही बोला बहन यह क्यां ? अरे ! महाराज को पकडने लश्कर आ रही है । नहीं, नहीं कोई नहीं आ रहा है । मैं एक गाँव से आ रहा हूँ कोई दिखाई नहीं दिया । ऐसा जानकर भाई के साथ वापस आ गयी ।

घर आकर जेसिंगने महाराज से पूछा यह सब क्या है ? किस की सेना आ रही है ? आप आज्ञा करे तो दश हजार हथियार धारी लडने को तैयार है । तब महाराज हंसते हुए बोले जेसिंग ? कोई नहीं आ रहा है हम तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे । ऐसी शूरवीरांगना वखतबा थी । भगवान का पक्ष रखने वाले को ऐसा ही होना चाहिए ।

"हरिनो मारग छे शूरानो,
नहीं कायरनुं काम जोने ।"

इस प्रकार अनेक लीलायें वहेलाल गाँव में श्रीहरि ने की थी । सभी के घर भोजन किये थे । बडे-बडे संतो को दीक्षा दिये थे । तालाब के किनारे बडी-बडी सभा किये थे । भगवान स्वामिनारायण ने ऐसा वचन दिया था कि जेसिंग के महल के नीचे से जो जायेगा या दर्शन भी करेगा उसका हम कल्याण करेंगे । आज भी वहाँ दर्शनार्थियों को भीड लगी रहती है । यह सब मूल सम्प्रदाय में ही देखने को मिलता हैं ।

•

श्रीजी महाराज की कृपा

- कंचनबहन रणछोडभाई पटेल

जामनगर शहर की झवेरबा स्वामिनारायण सम्प्रदाय की महान मुक्तात्मा थीं । उन्होंने युवानवय में ही किसीको न स्पर्श करने का नियम ले लिया था । समय वीतते उनके आँख से दिखाई देना बन्द हो गया । रतौंधी हो गयी । डाक्टर को बताया गया तो डाक्टर ने कहा आपरेशन करना होगा । झवेरबा जामनगर मन्दिर में घनश्याम महाराज की अन्तर मन से प्रार्थना की कि हे महाप्रभु मैंने किसीको न स्पर्श करने का व्रत लिया है । आप भक्तवत्सल है । मेरा व्रत-नियम बना रहे ऐसी कृपा करना । भगवान उसकी प्रार्थना सुनकर स्त्रीका स्मधारण करके मंदिर में आये और साथ प्रदक्षिणा करते है, तुलसी का अर्क निकाल कर उसकी आँख में डालते है । आँख में जलन अधिक होती है, महाराज मस्तक पर हाथ रखकर धैर्य दिये, थोडी दर्द कम हो गयी । झेवरबा आँख खोली तो दिखाई देने लगा । लेकिन मंदिर में कही कोई महिला दिखाई नहीं दी उनके मन में दृढ विश्वास हो गया कि महाप्रभु स्वयं स्त्री का स्म धारण करके आये थे मेरे दर्द को दूर करने, मेरे व्रत की रक्षा करने । तुरंत घनश्याम महाराज की मूर्ति के सामने जाकर आनन्द के अश्रुजल के साथ प्रार्थना करती हुई कहने लगी कि हे करुणा के सागर आपके करुणा का कोई पार नहीं है । इसके बाद इस वात की खबर डाक्टर को हुई कि बिना आपरेश के आंख ठीक हो गयी, रतौंधी चली गयी, यह तो मात्र श्रीजी महाराज

की कृपा का ही चमत्कार है। यह घटना संप्रदाय में चिरस्मरणीय बनी रहे इस हेतु से भावदानजीभाई सुंदर कीर्तन लिखे है।

"आज कलियुग मां परचा पुरे
प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे।"

झवेर बा का दूसरा प्रसंग भी जानने योग्य है। उनके जोडो में वायुविकार के कारण बहुत तकलीफ रहती थी, जिससे मंदिर जाना बन्द हो गया। मन हीमन से घनश्याम महाराज का ध्यान करलेती। घर बैठे भक्त चिंतामणी का पाठ एवं लीला चरित्र को सुनलेतीं थी। यथार्थतः भक्त चिंतामणी भक्तों के लिये चिंतामणी के समान है। ऐसा ही झवेरबा के जीवनमें एक प्रसंग बना। एकबार वे भक्त चिंतामणी का पाठ कर रही थी। उन्हें झपकी आ गयी इतने में कोई आकर अंगूढा पकड़कर हिलाया, पुनः झपकी आयी फिर कोई हिलाया, वे अगल बगल देंखी कोई नहीं था, उनके मन में हुआ खडा होकर देखें कि कोई अगल-बगल है तो नहीं, जब वे खडी हुई तो उनके जोडो की दर्द गायब हो गयी थी, अब और घनश्याम महाराजको दृढता हो गयी कि मेरे आंख की रोशनी जिसने दिया वहीं हमारे संन्धिवायु को भी ठीक किया है। सभी को भगवान स्वामिनारायण के सामर्थ्य की बात कीं, यह घटना सम्प्रदाय में इतिहास के रूप में लिखी गयी।

आज कलियुग में भी भगवान श्रद्धालु भक्तों की प्रार्थना सुनते है। सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की अडिग श्रद्धा एवं निष्ठा तथा सम्प्रदाय के पीठ का वफादार होने से झवेरबा की आंख का•आपरेशन एवं जोडो की दर्द को क्षणभर में ठीक कर दिया इसी प्रकार की एक दूसरी घटना है एक बहन को डॉक्टर आपरेशन के लिये आपरेशन थियेटर में ले गये। वह बहन भगवान की अत्यन्त निष्ठापूर्वक भक्ति करती थी, वहीं आपरेशन थियेटरमें भगवान को प्रार्थना करने लगी कि हे महाराज मेरा आपरेशन न हो कोई दूसरी उपाय हो, उसी समय भक्तवत्सल भगवान डॉक्टर को प्रेरणा दिये की विना आपरेशन के इन्जेकशन से दर्द ठीक हो जायेगी। डॉ.ने ऐसा ही किया, बहन को इन्जक्शन लगते ही दर्द शांत हो गया। वह चलकर मंदिर दर्शन करने आयी। श्रीजी महाराज की कृपा से उस बहन को विदेश जाने का वीजा मिल गया वहाँ घूमकर शांति से वापस घर आ गयी, उसे कोई तकलीफ नहीं हुई।

जो मेहनत से नहीं मिलता वह प्रभु की कृपा से क्षणमात्रमें मिलजाता है। अपने बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री "षष्टिपूर्ति" महोत्सव प्रसंग पर "वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" यह पुस्तिका हमें भेटं दिये हैं। जिसका नित्य पाठ करने से श्री नरनारायणदेव का बल मिलेगा श्री नरनारायणदेव की महिमा समझ में आयेगी।

•

अच्छे लग रहे हो राजेन्दर

- रमा बहन सोनी (लीबडी)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान जब गाँव गाँव में फिर रहे थे उस समय गाँव में खूब चरित्र किये। एक समय श्रीजी महाराज एक गाँव में पधारे, उस गांव में एक ब्राह्मण भक्ता पुतलीबाई रहती थी। उनके घर खिचडी खाने महाराज पधारे। बाई खिचडी खाने के लिये परोसी। महाराज खाते समय खिचडी निकाल कर अगल बगल रख रहे थे। उसे देखकर वृद्धा मांने कहा महाराज ! भक्तिमाता आपको खिचडी खाने को सिखाई नहीं है। आपको खाने नहीं आ रहा है। जब खीचडी खाने नहीं आता तो जनता का कल्याण कैसे करेंगे।

बाद में श्रीजी महाराज ने कहा पुतलीबाई ? कल्याण तो मैं इस तरह करता हूँ .... ऐसा कहकर ज्यों ही महाराज चुटकी बजाये कि वृद्धा माता को समाधि लग गयी। उस समाधि में उन्हें अक्षरधाम दिखाई दिया जिसमें महाराज दिव्य आसन पर विराजमान थे बाद में महाराज ने कहा, पुतली अब विश्वास हुआ कि मैं किस तरह कल्याण करूँगा।

"रूडा लागो छो राजेन्द्र मंदिर मारे
आवता रे... रूडा..

महाराज के दिव्य दर्शन से मूर्ति का वर्णन करने लगी। आप मेरा ही नहीं अनेकों का कल्याण करोगे। बाद में समाधि में से बाहर आने पर देखीं तो महाराज खिचडी खा रहे थे। पुतलीबाई महाराज के चरणों में गिर पडी। ऐसे महाराज एवं उन्हीं के वंशज प.पू. बडे महाराजश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. गादीवालाश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा में जो वर्तन करेगा उसका कल्याणतो निश्चित ही होगा।

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ वचनामृत के अनुसार दो समाधि कही गही है । सविकल्प एवं निर्विकल्प समाधि क्या है ?

प्रश्न : २ शास्त्र में नवधा भक्ति कही गयी है उन नवधाभक्ति के कर्ता का नाम बताइये ?

प्रश्न : ३ भक्तजनों के आमंत्रण का सम्मान करके श्रीहरि सर्व प्रथम जेतलपुर में किस वि.स. में पधारे थे ?

प्रश्न : ४ श्रीजी महाराज गोपालयोगी के पास अष्टांगयोग सीखे उन अष्टांगयोगो का क्या नाम है ?

प्रश्न : ५ धोलका में श्रीहरिने मोरलीमनोहर देवकी स्थापना की उन मोरली मनोहर देवका नाम स्वामिनारायण भगवानने कैसे रखा था ?

प्रश्न : ६ यह कडी भक्तचिंतामणी के किस प्रकरण में आई है । "श्रद्धावान लभते ज्ञानम्" गीताजी के किस अध्याय में आता है ?

प्रश्न : ७ मुनि कहे जप मंगल मूरति सदुपति नमसु उरथी तमे छो कस्गानां दरिया दर्शन दई दुःख संकट हरिया ।

दिसम्बर २००६ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) स.गु. मुक्तानंद स्वामी के कुल प्रश्न (९१)

(२) स.गु. प्रसादानंद स्वामी ग.म.प्र. ७८ वचनामृत । जैसे संत कहें वैसे संशय रहित होकर जो करे उस जीव का वही मोक्ष का हेतु है ।

(३) केशव भगवान का स्मरण करना ।

(४) सारंगपुर के ३ रे वचनामृत में मुक्तानंद स्वामी की बात की है ।

(५) ऋषि स्य धरम् (नरनारायणदेव का अष्टक) सभवेत् सतत नारकी ।

(६) जेतलपुर धाममें चलती हुई स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला की स्थापना अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के प.पू.ध.धु. आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने सं. १८८२ में किया था जिसे कुल १२१ वर्ष हो गया ।

(७) ब्रह्मानंद स्वमी ।

१. श्री अरविंदाबहन भावसार (चांदलोडीया)
२. श्री सुभद्राबहन पटेल (कनीपुर)
३. श्री शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
४. श्री कंचनबहन बाबुभाई
५. श्री निलेशभाई शैलेषभाई (रतनपुर)
६. श्री अजय घनश्यामभाई (नांदोल)
७. श्री कैलाशबहन विष्णुभाई (नांदोल)
८. श्री अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
९. श्री साकरबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल
१०. श्री विणाबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल)
११. श्री पटेल भगवानदास वेलजीभाई (मोरबी)
१२. श्री गोरधनभाई शंकरभाई (सोजा)
१३. श्री अमृतलाल मोदी (सोजा)
१४. श्री माणेकलाल मणीलाल,
श्री शिल्पाबहन मणीलाल (दहेगाम)
१५. सां.यो. उषाबा तथा शिल्पाबा (सुरेन्द्रनगर)

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. "भक्तिसुधा" श्री स्वामिनारायण मासिक में समाविष्ट हुआ है । जिस कारण भक्तिसुधा लेख लिखने वाली बहने श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के पते पर लेख लिखकर भेंजे ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव का १८५ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

संप्रदाय का सर्व प्रथम निर्मित भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर में ता. २०-२-२००७ फाल्गुन शुक्ल-३ के दिन सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८५ वां पाटोत्सव धूमधाम सम्पन्न हुआ।

प्रातः ६-३० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं प.पूज्य बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य राकेशप्रसादजी महाराश्री के वरद् हाथों से भरतखंड के अधिपति सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार पूर्वक महाभिषेक वेदविधि से धूमधाम के साथ किया गया। हजारों की संख्या में श्रद्धालु दिव्य दर्शन करके मोक्ष के भागी बने।

इस प्रसंगके अवसर पर सभा संचालन पू. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने सर्वावतारी भगवान श्री नरनारायणदेव की महिमा शास्त्र समस्त एवं बडेरोचक ढंग से समझाया था। शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, वडताल के सरजूदासजी, मूली के कृष्णवल्लभदासजी इत्यादि अनेक विद्वानोंने श्री नरनारायणदेव की अनेक लीलाओं का वर्णन किया। पाटोत्सव के यजमान मेतपुरके श्री सोमचंद्रभाई मगनभाई पटेल तथा स्वर्गीया काशीबहन सोमचन्दभाई अ.नि.श्री शंकरलाल पटेल के स्मरणार्थ श्री शंकरलाल सोमचन्द्र पटेल परिवार के श्री घनश्यामभाई, श्री अशोकभाई, श्री दीपकभाई तथा उनके पौत्र हरिकृष्ण, नीलकंठ, अभिषेक, मुनिराज, प्रीतेश, दिपीन आदि परिवार के सभ्यों ने श्री नरनारायणदेव का पूजन अर्चन एवं दोनो देश के आचार्यश्री का पूजन-अर्चन एवं आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

वडताल पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. कालुपुर पीठाधिपति आचार्य महाराजश्री ने भक्तजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इसके बाद दोनो आचार्य महाराजश्री अन्नकूट की आरती उतारे थे। अन्नकूट की आरती के दर्शनमें भी हजारों भक्तजन आरती का लाभ लेकर कृतकृत्य हो गये थे। इस प्रसंग पर दोनो देश के त्यागी-गृहस्थ उपस्थित थे सभी के लिये मंदिर की तरफ से महाप्रसाद की व्यवस्था की गयी थी।

- कोठारी धर्मप्रकाश

श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव के अवसर पर परम्परागत पदयात्रा

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री नरनारायणदेव भगवानको अपने बाहों में भरकर अपने ही स्वरूप को प्रतिष्ठित किया था। जिस १८५ वें पाटोत्सव को इष्ट देव श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री नरनारायणदेव के प्रतिष्ठा प्रसंग पर कांकरिया तालाब से रायपुर एवं रायपुर से बाजे-गाजे के साथ कालुपुर मंदिर पधारे थे। उसी दिव्य स्मृति को तदरूप देने के लिये ता. १८-२-०७ रविवार को प्रातः ६-०० से ७-०० बजे तक प.पू. बडे महाराजश्री के साथ हजारो संत भक्तजन हाथी-घोडे-ऊँट को सुसज्जित करके बाजे गाजे के साथ रायपुर दरवाजे से सांकडी शेरी, रतनपोल होते हुए कालुपुर मंदिर पधारे थे। इस प्रसंग का लाभ पोल में रहनेवाले अनेक नरनारी आबाल वृद्ध सभी को हुआ। सभीने प.पू. बडे महाराजश्री का जगह जगह पर स्वागत किया। इस यात्राने १८५ वर्ष पूर्व की झांकी सभी के सामने खड़ी कर दी थी।

- जयेश पटेल

श्री नरनारायणदेव देश के वासणा एवं मोरबी मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री एवं भावी आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य ध्यानी स्वामी की प्रेरणा से अहमदाबाद वासणा एवं मोरबी में भव्य शिखरी मंदिर का निर्माण होने से ता. २६-१-०७ से ३१-१-०७ तक वासणा में तथा १-२-०७ से ५-२-०७ तक मोरबी में मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से सम्पन्न हुई।

इस शुभ प्रसंग पर अमेरिका, युरोप, अफ्रिका, यु.एन.आई. से तथा देश विदेश के बडी संख्या में हरिभक्त सपरिवार पधारे थे। इस के अलांवा अहमदाबाद, मूली, भुज, जेतलपुर, ध्रांगध्रा, सुरेन्द्रनगर, पेथापुर, बावला, गांधीनगर, धोलका, मकनसर आदि अनेक धामों से संत पधारे थे। सभी ने ८४ वर्ष के पूज्य ध्यानी स्वामी की इस उम्र में किये गये पुरुषार्थ की प्रसंशा की थी।

इस प्रसंग पर विष्णुयाग, कथा पारायण, श्रीहरि लीलाचरित्रों का प्रदर्शन आदि कार्यक्रम किया गया था। दोनो स्थलों पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा दोनो गादीवाला तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सांनिध्य में प्रारंभ एवं पूर्णाहुति दोनो धूमधाम के साथ सम्पन्न हुई।

श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा पारायण शास्त्री स्वामी सत्संगभूषणदासजीने की थी। मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में अहमदाबाद एवं मोरबी में शोभायात्रा की भव्यता की कोई सीमा नही थी। डेढ की.मी. लम्बी इस सुन्दर शोभायात्रा में नानाविध श्रृंगारो से अलंकृत रथ में श्रीहरि को विराजमान किया गया था। इसके अलांवा एरोप्लेन, कमल, गरुडजी, का स्वदेकर अलंकृत किया गया था। शोभायात्रा में नर-नारियों की रासमंडली, भजन मंडली, बैन्डपार्टी, ट्रक-मोटर-कार इत्यादि का काफिला चल रहा था। पू. आचार्य महाराजश्री सभी को दिव्य दर्शन का लाभ दे रहे थे।

इस प्रसंग पर गुजरात राज्य के वित्तमंत्री वजुभाई वाणा, श्री भूपेन्द्रसिंह चुडासमा, गुजरात भाजप प्रदेश अध्यक्ष पुरुषोत्तमभाई स्याला, आरोग्यमंत्री श्री अशोकभाई भट्ट, गृहमंत्री श्री अमितभाई शाह तथा अनेक धार्मिक एवं राजकीय महानुभाव उपस्थित थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञामें रहनेवाले ध्यानी स्वामी के मंदिर निर्माण के भगीरथ कार्य की प्रसंशा की थी। इन दोनो स्थलों पर उत्सव में लाखों धर्मप्रेमी भक्तजन उपस्थित होकर भोजन प्रसाद एवं कथा का लाभ लिये। धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के दर्शन का लाभ सभी को प्राप्त हुआ। पूज्य ध्यानी स्वामी के निर्देश में यहकार्य निर्विघ्न पूर्ण हुआ था।

वासणा महोत्सव में उद्योगकार श्री निलेशभाई एस. भट्ट की देखरेख में हिमालय का प्रदर्शन किया गया था। पूज्य ध्यानी स्वामीने इस शुभ प्रसंग पर बताया कि "मैं तो एक छोटा साधु हूँ"। यह सभी प्रताप श्री स्वामिनारायण भगवान एवं प.पू. आचार्य महाराजश्री का है। इस जगत में सभी भगवान के बालक हैं। बालकों की सेवा करना हम अपनी धर्म समझते हैं। इस प्रकार सुंदर वात की थी।

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट

धोलका श्री स्वामिनारायणमंदिर में भव्य सत्संग सभा

धोलका श्री स्वामिनारायणंदिर में सर्वोपरि श्री मोरली मनोहर देव के दिव्य सांनिध्य में एवं श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में ता. १७-२-०७ के दिन भव्य सत्संग सभा एवं गांधीवाडा मंदिर में कलश स्थापन कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ ।

प्रथम धोलका मंदिर में स.गु. महंत स्वामी जगतप्रकाशदासजी और स.गु. महंत स्वामी विष्णुप्रसाददासजी के मार्गदर्शन और प्रेरणा से धोलका शहर और धोलका देश के गाँव के लगभग २००० जितने हरिभक्त सत्संग सभा में उपस्थित रहे थे । मंदिर के दिव्य सभा मंडप में श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजीने सभा संचालन किया था । पूज्य महंत स्वामी जगतप्रकाशदासजी, मूली के मंहत स.गु. स्वामी ज्ञानवल्लभदासजी अयोध्या, दिल्ही मंदिर के महंत स.गु. स्वामी देवप्रसाददासजी आदि अनेक विद्वान संत और हरिभक्तोने आज के प्रसंग की सभा को प्रोत्साहित किया था । अंत में परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद देते हुए महंत स्वामी द्वारा की गई सुंदर प्रवृत्ति निरंतर चालु रखने के आशीर्वाद के साथ आज्ञा करके बहुत प्रसन्न हुए थे । उसके बाद गांधीवाडा मंदिर में कलश का स्थापन पूजन करके ठाकुरजी की आरती उतारी थी । यहाँ के पूजारी बचु भगत ठाकुरजी की सुंदर सेवा करते हैं । इसप्रसंग पर २००० जितने हरिभक्तोंने धोलका मंदिर में दो सुंदर पकवान के साथ महाप्रसाद का आयोजन महंत स्वामीने किया था । इस प्रसंग पर मूली से स.गु. स्वामी हरिस्वरूपदासजी, कोठारी स्वामी जयप्रकाशदासजी आदि संत मंडल सेवा में खास उपस्थित रहे थे ।- *भरत भगत*

नारायणघाट मंदिर में ११ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्री की आज्ञा से साबरमती के तट पर पवित्रतीर्थ भूमि नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर का ११ वाँ पाटोत्सव माघ कृष्ण-५ ता. ७-२-०७ को स.गु. महंत देवप्रकाशदासजी, स.गु. छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से पाटोत्सव के यजमान पद पर श्री अम्बालाल बाभाईदास पटेल तथा अ.सौ. कैलाशबहन अंबालाल पटेल की तरफ से सम्पन्न हुआ । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार विधि से महाभिषेक किया गया । इसके बाद सभा में यजमान परिवार के श्री अंबालालभाई तथा उनके पुत्र हितेशभाई, श्री धवलभाई आदि सभीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया । प्रासंगिक सभा में मंदिर के महंत स्वामी, शा. हरिकृष्णदास तथा छोटे पी.पी. आदि संत मंडलने प्रसंगोचित प्रवचन किया । अंत में समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया ।

- ब्र. पूजारी राजेश्वरानंदजी

वरसोडा मंदिर में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा

वरसोडा गाँव में आज से १०० वर्ष पूर्व श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण अ.नि.स.गु. स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी ने करवाया था। वह जीर्ण हो गया था । जिससे प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा मंहत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा शास्त्री हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से हरिभक्तों के साथ सहकार से नूतन भव्य मंदिर का कार्य पूर्ण होते ता. ३०-१-०७ के दिन मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया । इस प्रसंग पर श्रीहरियाग तथा श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । मूर्ति प्रतिष्ठ के यजमान अ.नि. नाथजीभाई इच्छाराम शुक्ल तथा अ.नि. श्री ईश्वरलाल लाभशंकर पंड्या मंडल, श्री हरिकृष्ण कन्हैयालाल जानी परिवार प्रसाद के यजमान गं.स्व. मुजीबा लखतसिंहजी चावडा तथा अ.नि. शिवसिंहजी कल्याणसिंह परिवार तथा श्री छत्रसिंह गोबरसिंह राओल परिवार थे । तदुपरांत पू. महाराजश्री के पूजन एवं उतारा के यजमान, यज्ञ शोभायात्रा एवं मूर्तियों के यजमानों ने दिव्य लाभ लिया था । ता. ३०-१-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम के साथ मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी थी । इस प्रसंग पर यजमान परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन एवं आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । सभा में विद्वान संतोने सुंदर प्रवचन किया था । अंत में सभी सभाजन को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

- साधु जयप्रकाशदास गु. हरिकृष्णदासजी

टोराड मंदिर में ५४ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स.गु. गोपालानंद स्वमी के पवित्र जन्म स्थान टोरडा मंदिर में विराजमान महाप्रतापी देव श्री गोपाललालजी हरिकृष्ण महाराज का ५४ वाँ पाटोत्सव माघ शुक्ल-८ को धूमधाम के साथ मनाया गया । महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासकी प्रेरणा से पाटोत्सव के मुख्य यजमान श्री ठाकोरभाई वसनजी पटेल तथा अ.सौ. नीरुबहन ठाकुरभाई पटेलने दिव्य लाभ लिया था ।

इस प्रसंग पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था । माघ शुक्ल-८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी के अन्नकूटकी आरती उतारकर सभी को दिव्य आनंद दिया । यजमान परिवार तथा गाँव के भक्तोंने एवं वडताल के हरिकेशवदासजीने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजनअर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया ।

सोकली, इडर, महुन्द्रा, हिंमतनगर, अहमदाबाद, वडताल के संतोने टोरडा गाँव एंव स.गु. गोपालानन्द स्वामी की महिमा बताई थी । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

- मोहन भगत

कांकरिया रामबाग मंदिर में पाटोत्सव एवं ब्रह्माभोज

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं महंत स्वा. गुरुप्रसाददास, महंत स्वा. देव स्वामी, कोठारी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से फाल्गुन शुक्ल-५ को श्री राधाकृष्णदेव एवं बाल स्वरूप कष्टभंजनदेव का भव्य पाटोत्सव एवं ब्रह्माभोज इसके साथ सत्संगिजीवन के पंचाह्न पारायण की कथा को.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजीने की थी । इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । सभी को आशीर्वाद देकर प्रसन्न किये थे । फाल्गुन शुक्ल-५ को प्रातः ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके वरद् हाथों से पाटोत्सव सम्पन्न हुआ । अंत में महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारकर सभी को दिव्य दर्शन का लाभ दिया था । प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी शा.निर्गुणदासजी जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी, पू. ध्यानी स्वामी, शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा.स्वा. के शवप्रकाशदासजी, शा.स्वा.

हरिकृष्णदासजी, धोलाक महंत स्वामी, मूली के महंत स्वामी, सुरेन्द्रनगर के कृष्णवल्लभ स्वामी, वडनगर के नारायणवल्लभ स्वामी, राजेन्द्रप्रसाददासजी, गोलोकविहारी स्वामी, को. धर्मप्रकाशदास इत्यादि अनेको छोटे-बड़े संत सभा में उपस्थित रहे। करीब चालिस हजार ब्राह्मणोने भोजन किया।

अंतमें प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद देकर महंत स्वामी के कार्यो की प्रसंशा की थी।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव शाकोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से एवं नारायणपुरा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २८-१-०७ माघ शुक्ल-१० को शाकोत्सव एवं १२ वाँ पाटोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था। पाटोत्सव के यजमान श्री मुकेशभाई माधवलाल पाटडिया थे। शाकोत्सव के यजमान श्री जयंतिभाई साकलचंदभाई पटेल थे।

ता. २८-१-०७ की सुबह में बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से घनश्याम महाराजका महाभिषेक किया गया था। बाद में सभा में महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

दोनो प्रसंग में पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से संत मंडल एवं श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। १११ संत एवं ७००० जितने भक्तजन शाकोत्सव में भाग लिये थे। अहमदाबाद, मूली, जूनागढ, गढडा आदि स्थलों से संत पधारे थे।

- सत्यस्वरूप स्वामी

एप्रोच बापूनगर मंदिर में दूसरा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. २६-१-०७ के दिन बालस्वरूप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया।

रमेशभाई शुक्ल ने पूजारी भक्तिनन्दन स्वामी के साथ श्रीघनश्याम महाराज का पूजनकिया बाद में पूज्य महाराजश्री ने षोडशोपचार अभिषेक करके आरती की। इसके बाद महाराजश्री टोरडा मंदिर के लिए निकल गये।

प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान श्री केशुभाई जोगाणी के पुत्र श्री अनिलभाई तथा श्री किरणभाई ने श्री बडे महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया। यहाँ के मंदिरकी प्रतिष्ठा के समय अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी निर्गुणदासजी ने वक्तापद पर आयोजित भागवत कथा एवं श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा की DVD एवं MP3 कैसेट बद्रिनारायण मंदिर के महंत स्वामी गोलोक स्वामी द्वारा तैयार की गयी थी जिसका विमोचन प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न किया गया था। प्रासंगिक सभामें अन्य मंदिर के संत भी पधारे थे।

प.पू. बडे महाराजश्री ने आशीर्वचन में दृष्टांत देते हुए कहा कि सत्संग में क्वोलिटी कन्ट्रोल श्री नरनारायणदेव की निष्ठा उपर विशेष आरदिया था। और यहभी कहा कि जिस प्रकार श्रीजी महाराज को वन-उपवन नदी-पर्वत एकांत इतना प्रिय था। फिर भी सत्संग छोडकर कही जा सके नही।

इसी प्रकार हम भी निवृतिके बाद म्युझियम प्रिय होते हुए भी देश विदेश में सत्संग की व्यापकता दिन प्रतिदिन वढने के कारण, भक्तों को भजन करते देखकर हमें भी सत्संग के कार्यक्रमो में हाजिर होना पडता है।

इस प्रसंग में दर्शन एवं आशीर्वाद देने के लिए अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूप प.पू. गादीघाला श्री भी पधारी थी। *- गोरधनभाई वी. सीतापरा*

वडथल (ता. कढलाल) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

महुधा तहसील का वडथल गाँव सर्वोपरि श्रीहरि के दिव्य चरणों से अनेकों बार पावन हुआ है। ऐसी इस तीर्थभूमि में प.पू.ध.धु. आचार्य माराश्री की आज्ञा से जेतलपुर के पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के श्रीहरि के समकालीन त्रिवेदी परिवार के श्री ऋषिकेश सांकळचन्द्र त्रिवेदी परिवार(यु.एस.ए.) तथा श्री विनोदभाई गणपतराम शेलत साहब परिवार के आर्थिक सहयोग से मंदिर का निर्माण कार्य समय से पूर्ण हो गया। ता. २३-१-०७ से २५-१-०७ तक मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में त्रिदिनात्मक दशमस्कन्ध पारायण, विष्णुयाग, नगरयात्रा, वास्तु विधि जैसे कार्यक्रमो का आयोजन किया गया था। मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रथम दिन जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी आत्मप्काशदासजी दीप प्राकट्य करके श्री नरनारायणदेव एवं आचार्य महाराजश्री के प्रति निष्ठा व्यक्त की थी। कथा पारायण स्वामी भक्तिनन्दनदास ने किया था। ता. २४-१-०७ को मूर्तियों की नगरयात्रा निकाली गयी थी। जिसका सभी दर्शन करके धन्य हो गये थे।

ता. २५-१-०७ की प्रातः प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री श्रीहरि के समकालीन गलुजी भक्त के गाँव गडुसर पधारे थे। वहाँ मंदिरमें आरती करके गलुजी भक्त के घर छत्र का दर्शन करके वडथल पधारे थे। महाराजश्री की यहाँ भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। बाद में पूज्य आचार्य माराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा, आरती, यज्ञ पूर्णाहुति हई। बाद में सभा में भी कथापूर्णाहुति की आरती उतारी थी.

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार एवं ग्रामजनो ने पूज्य आचार्य महाराजश्रीका पूजार्चन करके आरती उतारी थी। बाद में जेतलपुर, जमियतपुरा आदि मंदिरो के संत प्रसंगोचित प्रवचन किये थे। सभा संचालन पी.पी. स्वामीने किया था। अंत में पूज्य आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस महोत्सव में श्रीहरिकृष्णभाई, श्री जशुभाई, श्री जगदीशभाई, श्री भरतभाई, श्री मफतभाई आदि हरिभक्तोंने खूब सेवा करके आचार्य महाराजश्री की कृपा दृष्टि प्राप्त की।

- साधु विश्वप्रकाशदास, जेतलपुर

अपने शिक्षण संस्था का समाचार

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज के णवडी ट्रस्ट संचालित श्री सहजानद सेकेन्डरी - हायर सेकेन्डरी स्कूल (अंग्रेजी माध्यम) का गौरव।

चालू वर्ष में १४ वीं नेशनल चिल्ड्रन साईन्स कांग्रेस आयोजित बाल वैज्ञानिक प्रतिभाओं के लिये प्रोजेक्ट (शोध निबन्ध स्पर्धा में अपनी शाला के कक्षा ९ के विद्यार्थी (१) त्रिवेदी आस्था (२) सेवक पवन (३) देसाई अभय (४) पटेल शैली विद्यालय के आचार्यजी. एन. बी. गढवी की प्रेरणा से तथा विज्ञान शिक्षक श्री पंकजभाई ओझा के मार्गदर्शन से वस्त्रापुर तालाब विषय पर संशोधन तैयार किये थे। यह प्रोजेक्ट जिला कक्षा एवं राज्य कक्षा स्तर पर पसन्द किया गया था। इसी के साथ गुजरात राज्य की तरफ से राष्ट्र स्तर पर पसन्दर होने से विद्यालय की विद्यार्थिनी कु. आस्था त्रिवेदी ता. २३ से ३० दिसम्बर तक सिक्किम राज्य की राजधानी गेंगटोक गयी थी। वहाँ उसे मणीपाल

इन्जियनियरींग कोलेज में डॉ. यशपाल सहित आगेवान वैज्ञानिकों के समक्ष शोध प्रस्तुत करके सभी के प्रसंशा का पात्र बनी थी। विद्यालय का नाम रोशन किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री उत्तरोत्तर प्रगति के लिये आशीर्वाद देते है। *- आचार्यश्री*

देलवाडा (माणसा) मंदिर में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी एवं संत मंडल द्वारा ता. २७-१-०७ के दिन देलवाडा गाँव में सत्संग सभा एवं शाकोत्सव का आयोजन किया गया था।

ता. २८-१-०७ को सभा के बाद शाकोत्सव मनाया गया था। जिसके यजमान श्री मणीभाई, श्री ईश्वरभाई तथा श्री तुलसीभाई थे। संतो पूजा के यजमान श्री घनश्यामभाई बापूदास परिवार था। इस प्रसंग पर मास्टर भगुभाई, पोपटभाई, बाबुभाई, तथा किरीटभाईने उत्तम सेवा कीथी। गाँव के भक्तों ने शाकोत्सव का उत्तम लाभ लिया।

२२ मन बाजरी के आंटे से रोटी बनाई गयी थी। शाकोत्सव में अ.सौ. कांताबहन अंबालालभाई शर्मा, शास्त्री जयंतीलाल के. अनेक भक्तों ने सेवा का लाभ लिया था।

- मणीभाई खांडवाला

मोणासा श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोणासा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वामी अखिलेश्वरदास की प्रेरणा से १० वें पाटोत्सव के उपलक्ष्यमें दशमस्कंध भागवत की कथा स्वा. भक्तिनन्दनदासने की थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके वरद् हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के यजमान श्री रमेशभाई विठ्ठलभाई पटेल एवं पारायण के यजमान श्री सुभाषभाई द्वारकादास सोनी परिवार तथा श्री शंकरभाई कोयाबाई पटेल ने लाभ लिया था।

सभासंचालन शास्त्री अखिलेश्वरदासने किया था। इस सभा में जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी, आनन्दजीवनदासजी, छपैयाप्रसाददासजी, आदि संतोने श्रीहरि के माहात्म्य को बताया था। अंतमें प.पूज्य आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था। पूजारी स्वा. सर्वेशश्वरदास एवं संत-पार्षद तथा भक्तोंने सुंदर सेवा की थी।

- पा. नरेन्द्र भगत

कुबडथल मंदिर में प्रथम पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. १२-२-०७ के दिन मंदिरमें विराजमान ठाकुरजी का पाटोत्सव श्री देवन्द भाई चतुरभाई पटेल तथा श्री गोविंदभाई चतुरभाई पटेल की तरफ से सम्पन्न हुआ था। अन्नकूट का दर्शन एवं संतो का प्रवचन सुनकर सभी धन्य हो गये थे। *- कोठारीश्री*

ईश्वरपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में ता. ५-१-०७ के दिन भव्य शाकोत्सव चौधरी समाज के द्वारा किया गया था। महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) एवं छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री जगदीशभाई अमृतभाई चौधरी (यु.एस.ए.) परिवारने लाभ लिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने समस्त गाँव को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

- कोठारी रमणभाई

बापुपुरा (चौधरी)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा. रामकृष्णदासजी, नारायणवल्लभदास आदि संतो की उपस्थिति में ता. १७-१-०७ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री रमणभाई लवजीभाई के यजमानपद पर भव्य शाकोत्सव मनाया गया था। पांच हजार जितने भक्तजन इस दिव्य लाभ का आनन्द लिये थे।

- चौधरी कांतिभाई पंडित

सापावाडा मंदिर में पाटोत्सव एवं घनश्याम महाराज की पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा

ईडरदेश के सापावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी प्रेमस्वरूपदास की प्रेरणा से ता. २१-२-०७ के दिन श्रीराधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक एवं बालस्वरूप घनश्याम महाराज की मूर्ति के यजमान श्री सुरेन्द्रभाई पटेल (विशालावाले) पाटोत्सव के यजमान श्री डाह्याभाई हरीभाई पटेल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका पूजन-अर्चन करके आरती उतारे थे। नाना देश से आये हुए संत अपनी अमृतवाणी का सभी कोलाभ दिये थे। अंतमें प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। *- जे.पी. स्वामी, पूजारी मूली*

धरियावद (राज.) मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव सम्पन्न

धरियावद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरके पू.पी.पी. स्वामी एवं शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नटवरभाई शंकरभाई पटेल की तरफ से ता. ३०-१-०७ को श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

महाभिषेक, महापूजा, अन्नकूट स्वामी राजेश्वरानंद एवं विश्वस्वरूप स्वामीने की थी। सभा संचालन महंत वासुदेवचरणदासजीने की थी। पू. पी.पी. स्वामी, पू. आत्मप्रकाशदासजी ने उपदेशात्मक प्रवचन किया था। *- अचलप्रकाशदास, धरियावद*

कलोली श्री स्वामिनारायण मंदिर

जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की छत्रछाया में आये हुए कलोली श्री स्वामिनारायण मंदिरमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास में धुनि एवं ता. ७-१-०७ के दिन जेतलपुर संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थी संत उपस्थित होकर शाकोत्सव धूमधाम से किये थे।

- वाडीलाल चन्दूलाल ठक्कर

नवरंगपुरा (पाटडी) में सत्संग सभा

इस गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ७-१-०७ के दिन सत्संग सभा के प्रसंग पर पू.पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर कथा-वार्ता के साथ नित्य नियम सर्वोपरि श्रीहरि की सर्वोपरिता का दृष्टांत देकर समझाया था। बडी संख्या में भक्तजन एकत्रित होकर लाभ लिये थे।

- डाह्याभाई बूटिया

कालियाणा में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १०-२-०७ के दिन प्रातः ६ से ७-१५ तक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जेतलपुर से. पू.पी.पी. स्वामी तथा संत मंडलने कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिया था। प्रातः ८ से ११ बजे तक संतोने महापूजा विधि कराई थी। सभी हरिभक्तों को विशेष आनन्द मिला।

- डाह्याभाई बूटीया

साचोदर (इडर देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा

से साचोदर मंदिर में धनुर्मास के समय भव्य शाकोत्सव किया गया था । इस के साथ स्वामिनारायण मंत्र के धुनिका भी आयोजन किया था । अगल-बगल के गांवो से बडी संख्या में भक्त आकर इसका लाभ लिया थे ।

- साधु सत्यसंकल्पदास

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

सुरेन्द्रनगर मंदिर में पारायण तथा शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मूलीधाम में विराजमान घनश्याम महाराजकी मूर्ति की प्रतिष्ठा को १०० वर्ष पूर्ण होने पर उसी के सन्दर्भ में भक्तचिंतामणी की कथा का आयोजन किया गया था । कक्षा के वक्ता स्वा. सत्यसंकल्पदासजी थे । इस प्रसंग पर ३०-१-०७ के दिन दोपहर में १२ बजे भव्य शाकोत्सव को मनाया गया था । बडी संख्या में भक्तजन लाभ लिये थे ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

लींबडी तपोवन मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से ता.५-२-०७ के दिन पांचवां पाटोत्सव धूम-धाम के साथ मनाया गया । इस प्रसंग पर ता. ४-२-०७ के दिन खिचड़ी उत्सव तथा पाटोत्सव के दिन साधु भक्तवत्सलदास, मूली अहमदाबाद मंदिर के संत अमृतवाणी का उपदेश दिये थे । *- कोठारी माणेकलाल*

लखवतर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री त्रिभोवनभाई परसोत्तमभाई मिस्त्री के यजमान पद पर श्रीमद् सत्संगीजीवन सप्ताह का पारायण शा. रामकृष्णदासजी (मूली-ध्रांगध्रा) के वक्ता पर सम्पन्न हुई । पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सभी भक्तजन दर्शन करके अपने जीवन को धन्य माना था । *- पटेल अमृतभाई*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी धर्मवल्लभदास की प्रेरणा से धनुर्मास में प्रातः ६-०० बजे मंगला आरती के बाद श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि एवं कथावार्ता महंत स्वामीने की थी । भक्तों की तरफ से नाना विध प्रसाद टाकुरजीको भोग में रखा गया था । पुजारी हरिनन्दनदासजी सुंदर ढंग से श्रीहरि को अलंकृत किये थे । उत्तरायण के दिन अन्नकूट का भोग लगाया गया । इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडेमहाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालश्री सभी भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करती है ।

वसंत पंचमी के शुभ अवसर शिक्षापत्री का समूह पूजन-अर्चन-पठन किया गया । स्वामी धर्मवल्लभदासने शिक्षापत्री की कथा की थी । १० फरवरी को शाकोत्सव मनाया गया । मंदिर में विराजमान श्रीहरिकृष्ण महाराज के सामने सभी भक्तजन बडी संख्या में उपस्थित रहे ।

कथा समाप्ति के बाद प्रमुखश्री जगदीशभाई पूज्य बडे महाराजश्री के कार्यक्रम की (प्रोग्राम) रूपरेखा समझाये थे ।

महाप्रसाद बनाने में श्रीविष्णुभाई, श्री धनुभाई, श्री बालकृष्णदादा, श्री कमलेशभाई शाह, श्री भानुभाई, तथा भोजनालय की व्यवस्था सभी बहनो ने की थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कृपा से सत्संग-अच्छा चल रहा है । *- विष्णुभाई सोलावाला एवं वसंतभाई त्रिवेदी*

कोलोनिया मंदिर में सेवा संस्था द्वारा श्री फ्लुशोट एवं मेडिकल चेकअप

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से १४ जनवरी को उत्तरायण के दिन सेवा संस्था द्वारा फ्री फलुशोट तथा मेडीकल चेक अप का आयोजन किया गया था । पांच डॉक्टरो ने ७८ भक्तों की फ्री सेवा की थी । ४० लोगों को आवश्यकतानुंसार दवा भी दिये थे । दूसरे अन्य रोगो के लिए भी अन्य डॉक्टरों की व्यवस्था की गयी थी । डी. शाह, डॉ. अमित दफ्तरी, डॉ. रघुवंशी रोहिणी, धर्मिष्ठा पटेल, एवं जस्मीना चौकसी आदि डॉक्टर सेवा का कार्य किये थे ।

उत्तरायण एवं धनुर्मास के धुनि की पूर्णाहुति १४ जनवरी को प्रातः ६ बजे की गयी थी । ६-३० बजे आरती में अनेक हरिभक्त दर्शनार्थ आये थे ।

आरती के बाद महंत शास्त्री स्वामी सत्यप्रकाशदासजी अपनी अमृतवाणी का भक्तों को लाभ दिया था । महापूजा के आयोजन में २३० हरिभक्त भाग लिये थे । महापूजा सत्यप्रकाश स्वामी एवं भक्तिकिशोरदासजीने करवायी थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है ।

- प्रविणभाई शाह

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अम्बापुर (जि. गांधीनगर) : प.भ. प्रभुदास शंकरभाई पटेल ता. २२-१-०७ प.भ. शांताबहन बेचरभाई पटेल ता. २६-१-०७ एवं प.भ. गंगाबहन रावजीभाई पटेल ता. २९-१-०७ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासीनी हुई है ।

सुखपर (रोहा) कच्छ : सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान एवं प.पू. आचार्य महाराजश्रीके कृपापात्र हरिभक्त प.भ. लालजी जादवा हिराणी ता. २९-१-०७ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं । इनको अक्षरनिवासी मोम्बासा (केनिया) में हुआ, इन के अक्षरनिवासी होने से कच्छ के सत्संग में कमी हुई है ।

ओल्डहाम (यु.के.) (केरा कच्छवाला) : प.भ. जयप्रेमजी सामनीगामी उम्र २१ वर्ष ता. २९-१२-०६ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुऐ है । अक्षरनिवासी के समय पूज्य आचार्य महाराजश्री उस समय लंडन पधारे थे, जिनके दर्शन से परमपद कीप्राप्ति हुई है । श्रीहरि उन्हे अपनी सेवा में रखेंतथा उनके परिवार को आत्मबल दें ऐसी नरनारायणधेव के चरणों में प्रार्थना ।

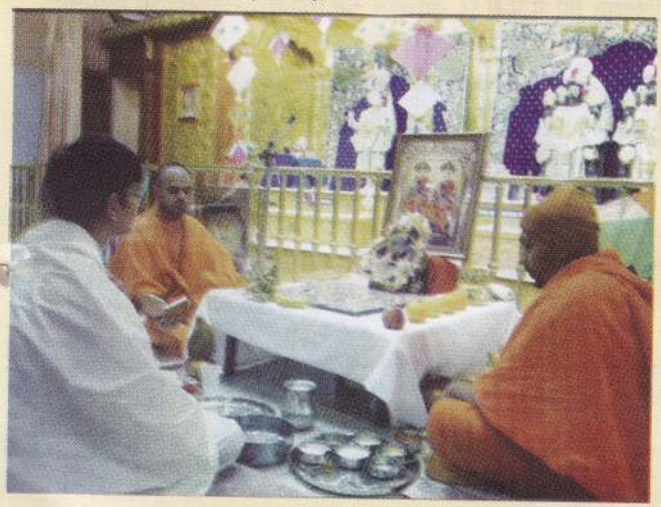
कोठा : प.भ. करशनभाई जोइताराम पटेल (गल्लापेटी मंडल वाले) के भाई प.भ. मणीलाल जोईताराम पटेल ता. २३-१-०७ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।



वरसोडा मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।



नारायणघाट मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारता हुआ यजमान परिवार ।



कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में महापूजा विधि करते हुए संत ।



बापूपुरा (ईश्वरपुरा) मंदिर में शाकोत्सव करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



कलोली मंदिर में जेतपुर संस्कृतपाठशाला के विद्यार्थी संत कथा वार्ता करते हुए ।



नारायणघाट मंदिर में शिवरात्री को शिवमंदिर में रुद्र यज्ञ करते हुए संत एवं ब्राह्मण ।

Registered under RNI No. applied for
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, वडताल के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, तथा प.पू. बडे महाराजश्री ।



श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव यजमान (मेतपुर-वडतालदेश) दोनो देश के पीठाधीश्वरों की आरती उतारते हुए एवं सभा को संबोधित करते हुए महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी ।



Kharsani